



सरकारी गजट, उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड सरकार द्वारा प्रकाशित

रुड़की

खण्ड-23] रुड़की, शनिवार, दिनांक 19 फरवरी, 2022 ई० (माघ 30, 1943 शक सम्वत्) [संख्या-08

विषय-सूची

प्रत्येक भाग के पृष्ठ अलग-अलग दिये गए हैं, जिससे उनके अलग-अलग खण्ड बन सकें

विषय	पृष्ठ संख्या	वार्षिक चन्दा
सम्पूर्ण गजट का मूल्य	—	रु० 3075
भाग 1—विज्ञप्ति—अवकाश, नियुक्ति, स्थान-नियुक्ति, स्थानान्तरण, अधिकार और दूसरे वैयक्तिक नोटिस	333-374	1500
भाग 1—क—नियम, कार्य-विधियां, आज्ञाएं, विज्ञप्तियां इत्यादि जिनको उत्तराखण्ड के राज्यपाल महोदय, विभिन्न विभागों के अध्यक्ष तथा राजस्व परिषद् ने जारी किया	81-87	1500
भाग 2—आज्ञाएं, विज्ञप्तियां, नियम और नियम विधान, जिनको केन्द्रीय सरकार और अन्य राज्यों की सरकारों ने जारी किया, हाई कोर्ट की विज्ञप्तियां, भारत सरकार के गजट और दूसरे राज्यों के गजटों के उद्धरण	—	975
भाग 3—स्वायत्त शासन विभाग का क्रोड़-पत्र, नगर प्रशासन, नोटीफाइड एरिया, टाउन एरिया एवं निर्वाचन (स्थानीय निकाय) तथा पंचायतीराज आदि के निदेश जिन्हें विभिन्न आयुक्तों अथवा जिलाधिकारियों ने जारी किया	—	975
भाग 4—निदेशक, शिक्षा विभाग, उत्तराखण्ड	—	975
भाग 5—एकाउन्टेन्ट जनरल, उत्तराखण्ड	—	975
भाग 6—बिल, जो भारतीय संसद में प्रस्तुत किए गए या प्रस्तुत किए जाने से पहले प्रकाशित किए गए तथा सिलेक्ट कमेटियों की रिपोर्ट	—	975
भाग 7—इलेक्शन कमीशन ऑफ इण्डिया की अनुविहित तथा अन्य निर्वाचन सम्बन्धी विज्ञप्तियां	—	975
भाग 8—सूचना एवं अन्य वैयक्तिक विज्ञापन आदि	37-38	975
स्टोर्स पर्वेज—स्टोर्स पर्वेज विभाग का क्रोड़-पत्र आदि	—	1425

भाग 1

विज्ञप्ति-अवकाश, नियुक्ति, स्थान-नियुक्ति, स्थानान्तरण, अधिकार और दूसरे वैयक्तिक नोटिस

कृषि एवं कृषक कल्याण अनुभाग-3

अधिसूचना

07 जनवरी, 2022 ई०

संख्या 44/XIII-3/2022-05(08)/2017-राज्यपाल, उत्तराखण्ड फल पौधशाला (विनियमन) अधिनियम, 2019 (उत्तराखण्ड अधिनियम संख्या 11, वर्ष 2020) की धारा 23 के अधीन शक्ति का प्रयोग करके, निम्नलिखित नियमावली, बनाते हैं :-

उत्तराखण्ड फल पौधशाला (विनियमन) नियमावली, 2021

- संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ** 1. (1) इस नियमावली का संक्षिप्त नाम 'उत्तराखण्ड फल पौधशाला (विनियमन) नियमावली, 2021' है।
- (2) यह तुरन्त प्रवृत्त होगी।
- परिभाषाएँ** 2. इस नियमावली में जब तक विषय या सन्दर्भ में प्रतिकूल बात न हो:
- (क) "अधिनियम" से उत्तराखण्ड फल पौधशाला (विनियमन) अधिनियम 2019 अभिप्रेत है,
- (ख) "कलैण्डर वर्ष" से 01 जनवरी से 31 दिसम्बर तक की 12 मास की अवधि अभिप्रेत है,
- (ग) "प्रपत्र" से इस नियमावली से संलग्न प्रपत्र अभिप्रेत है,
- (घ) "धारा" से अधिनियम की धारा अभिप्रेत है,
- (ङ) "अपीलीय प्राधिकारी" से अधिनियम के अधीन अपील सुनने के लिए राज्य सरकार द्वारा अधिकृत सचिव, कृषि एवं कृषक कल्याण अथवा उनके द्वारा नामित कोई अधिकारी जो अपर सचिव से निम्नतर पंक्ति का न हो, अभिप्रेत है,
- (च) "सक्षम प्राधिकारी" से ऐसा अधिकारी, जिसे राज्य सरकार द्वारा इस अधिनियम के अन्तर्गत वांछित कार्य करने हेतु शासकीय राजपत्र में अधिसूचना द्वारा नियुक्त/नामांकित किया गया हो, अभिप्रेत है,
- (छ) "अनुज्ञा पत्र" से अधिनियम के अधीन अनुज्ञप्ति प्राधिकारी द्वारा दिया गया अनुज्ञा पत्र अभिप्रेत है,
- (ज) "विहित" से अधिनियम के अधीन बनाये गये नियमों द्वारा विहित अभिप्रेत है,
- (झ) "उपरोपिका (scion)/शांकुर शाख (Budwood)" से किसी फल पौध का ऐसा भाग अभिप्रेत है जो मूलवृन्त (root stock) पर आँख के रूप में लगाया जाता है,
- (ञ) फल पौधशाला से कोई ऐसा स्थान अभिप्रेत है जहाँ फल पौधों

का प्रवर्धन, प्रबंधन और विक्रय कारोबार के नियमित अनुक्रम में किया जाता है एवं इसके अंतर्गत व्यवसायिक टिश्युकल्चर इकाई/लैब एवं सरकार द्वारा प्रबंधित फल पौधशाला भी सम्मिलित है,

- (ट) "फल की पौध" से ऐसे पौधे अभिप्रेत हैं जो खाने योग्य फल या गिरीदार फल उत्पादित कर सकें और इसके अंतर्गत गूटी (gootee), बीजू पौधे (seedling), कलम (graft), भूस्तारी (sucker), दाब डाली (layer), कन्द प्रकन्द (rhizomes) और ऐसे किसी पौधे की कलम (scion) भी सम्मिलित है।
- (ठ) "निरीक्षक अधिकारी" से विभाग के तकनीकी अधिकारी, जो वर्ग-1 के अधिकारी से निम्नतर पंक्ति का न हो अभिप्रेत है,
- (ड) "निदेशक" से निदेशक, उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण, उत्तराखण्ड अभिप्रेत है,
- (ढ) "अनुज्ञप्ति प्राधिकारी" से निदेशक, उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण चौबटिया, रानीखेत, अल्मोड़ा से अभिप्रेत है,
- (त) "पौधशाला स्वामी" से किसी फल पौधशाला के संबंध में ऐसा व्यक्ति या प्राधिकारी अभिप्रेत है जिसका ऐसी पौधशाला के कार्यकलाप पर अंतिम नियंत्रण हो और इसके अंतर्गत ऐसी पौधशाला का प्रबंधक, प्रबंधक निदेशक, प्रबंधक अभिकर्ता, कोई अन्य प्रभारी व्यक्ति या शासकीय पौधशाला के नियंत्रण प्राधिकारी (ए०डी०ओ०)/अधीक्षक/पौधशाला विकास अधिकारी/जिला/मुख्य उद्यान अधिकारी अथवा प्रभारी, पौधशाला भी सम्मिलित है
- (थ) "राज्य सरकार" से उत्तराखण्ड राज्य की सरकार अभिप्रेत है,
- (द) "प्रतिकर" से किसान द्वारा रोपे गए पौधों की कीमत तथा उनके प्रबंधन पर व्यय की गई धनराशि अभिप्रेत है,
- (ध) उन शब्दों और पदों का, जो इसमें प्रयुक्त हैं, और परिभाषित नहीं हैं, किन्तु उत्तराखण्ड फल पौधशाला (विनियमन) अधिनियम 2019 में परिभाषित वही अर्थ होंगे जो उस अधिनियम में हैं।

**फल पौधशाला का 3.
अनुज्ञा पत्र एवं आवेदन
जारी करने की शर्तें एवं
पात्रता**

अधिनियम की धारा 4 की उपधारा (3) व धारा 5 के अधीन दिये गये उपबन्धों के अधीन अनुज्ञा पत्र एवं अधिनियम की धारा 6 की उपधारा (1) के अधीन नवीनीकृत अनुज्ञा पत्र निम्नलिखित निबन्धनों और शर्तों के अधीन होगा:-

- (i) नियमावली के प्रवृत्त होने से तीन माह के भीतर प्रदेश में विद्यमान सभी फल पौधशालाओं को अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (1) के अधीन नए सिरे से अनुज्ञा-पत्र प्राप्त करना आवश्यक होगा।

- (ii) पौधशाला स्वामी को पौधशालाओं से सम्बन्धित सामान्य शैक्षिक ज्ञान होना आवश्यक होगा।
- (iii) 1.0 हैक्टर अथवा 1.0 हैक्टर से अधिक के फल पौधशाला स्वामी/अनुज्ञा पत्र धारक को उद्यान विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के किसी संस्थान अथवा राज्य के कृषि/औद्यानिक विश्वविद्यालयों/उद्यान विभाग से 15 दिवसीय पौधशाला प्रबन्धन से सम्बन्धित प्रशिक्षण प्राप्त करने का प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना होगा तथा पौधशाला प्रबन्धन के सम्बन्ध में विभाग द्वारा इसकी अनुशंसा की जायेगी।
- (iv) फल पौधशाला स्वामी के पास न्यूनतम, 0.20 हैक्टर निजी भूमि अथवा तीस वर्ष के लिए पंजीकृत पट्टा वाली भूमि होनी आवश्यक है और साथ ही 0.20 हैक्टर भूमि वाली पौधशाला के लिए एक फसल से अधिक के लिए अनुज्ञा पत्र जारी नहीं किया जायेगा:-

परन्तु यह कि पर्वतीय क्षेत्रों में फल पौधशाला स्वामी के पास न्यूनतम 0.10 हैक्टर भूमि का होना आवश्यक होगा।

- (v) फल पौधशाला की स्थापना हेतु मृदा, जलवायु एवं फल पौध प्रवर्धन के लिए निर्धारित शर्तों को ध्यान में रखते हुए अनुज्ञप्ति दी जायेगी।
- (vi) फल पौधशाला में फल के पौधों के वानस्पतिक प्रसारण के लिए मानक के अनुसार मातृवृक्ष और मूलवृन्त उपलब्ध होने आवश्यक हैं।
- (vii) मातृवृक्ष और मूलवृन्त रोग और नाशीकीट के प्रकोप से मुक्त हो।
- (viii) रोग और नाशीकीट के प्रकोप को रोकने के लिए पौध सुरक्षा प्रक्रिया अपनायी जायेगी।
- (ix) अनुज्ञा-पत्र को सदैव फल पौधशाला के परिसर में रखा जायेगा और अनुज्ञप्ति प्राधिकारी/निरीक्षक अधिकारी के मांगने पर, उसे निरीक्षण और जाँच करने के लिए प्रस्तुत किया जायेगा।
- (x) अनुज्ञा-पत्र धारक फल पौधशाला के फल के पौधों, मातृ पौधों और मूल वृन्तों में किसी रोग या नाशीकीट के फैलने और उस रोग और नाशीकीट के नियंत्रण करने के लिए की गयी कार्यवाही की सूचना पंजिका में अनुरक्षित करेगा।
- (xi) अनुज्ञा-पत्र धारक केवल उन पौधों का प्रसारण और विक्रय करेगा जिनके लिए अनुज्ञा-पत्र जारी किया गया है।

(xii) अनुज्ञा पत्र धारक द्वारा तैयार किया गया और विक्रय के लिए प्रयुक्त किया गया पौध निम्नलिखित विशिष्टियों का होगा—

(क) किसी फल पौध की आयु, फल पौधे को यथास्थिति, कलम लगाने या उसके बीज बोने के समय से तीन वर्ष से अधिक नहीं होगी।

(ख) मूलवृन्त और उपरोपिका पूरी तरह से आपस में मिले हुए हों।

(ग) मूलवृन्त से उपरोपिका का संयोजन भू-तल से 30 सेमी0 से अधिक नहीं होगा।

(xiii) अनुज्ञा-पत्र धारक अधिनियम में विहित प्रपत्रों में विभिन्न अभिलेख रखेगा।

(xiv) ऐसे फल के पौधों को जो मानक के अनुसार नहीं होंगे, अनुज्ञाप्ति प्राधिकारी या उसके द्वारा प्राधिकृत किसी अधिकारी की उपस्थिति में नष्ट कर देना होगा।

(xv) जहाँ एक व्यक्ति/संस्था के स्वामित्व में एक से अधिक फल पौधशालायें हों, चाहे एक ही नगर या ग्राम में हो या विभिन्न नगरों या ग्रामों में हों, वहाँ ऐसी प्रत्येक फल पौधशाला के लिए अलग-अलग अनुज्ञा पत्र प्राप्त करना होगा।

(xvi) अधिनियम की धारा 4 की उपधारा (4) के अनुसार आवेदक को उद्यान कार्ड एवं आधार कार्ड धारक होना अनिवार्य होगा।

(xvii) अनुज्ञा पत्र धारक को अनुज्ञा पत्र लेने के पश्चात् राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड, भारत सरकार से मान्यता प्रमाण-पत्र (Accreditation) प्राप्त करना आवश्यक होगा।

(xviii) समस्त पौधशाला स्वामियों को माल और सेवा कर (GST) का लाइसेंस प्राप्त करना आवश्यक होगा।

अनुज्ञा
जारी/नवीनीकरण
आवेदन की प्रक्रिया

पत्र 4.
हेतु

(1) अधिनियम की धारा 4 की उपधारा (1) के अधीन अनुज्ञा-पत्र प्राप्त करने के लिए आवेदन-पत्र प्रपत्र सं0-1 एवं 2 में विहित शुल्क सहित प्रस्तुत करना होगा। यह दो प्रतियों में दिया जायेगा और आवेदक द्वारा सम्यक रूप से हस्ताक्षरित होगा:

परन्तु, आवेदक ऐसी अतिरिक्त सूचना देने के लिए बाध्य होगा जिसे अनुज्ञाप्ति प्राधिकारी अधिनियम और इस नियमावली के उपबन्धों के अनुसार अनुज्ञा पत्र देने के लिए अपेक्षा करे।

(2) आवेदन-पत्र जिले के मुख्य/जिला उद्यान अधिकारी को प्रस्तुत किया जायेगा। मुख्य/जिला उद्यान अधिकारी निदेशक, उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण, उत्तराखण्ड द्वारा दिये गये अनुदेशों के अनुसार आवेदन-पत्र की अन्तः वस्तुओं का सत्यापन धारा 4 उपधारा (2) के अधीन प्रपत्र संख्या 1(क) में

प्रस्तुत करेगा। साथ ही विहित अवधि (एक माह) के भीतर आवेदन-पत्र अनुज्ञप्ति प्राधिकारी को प्रस्तुत करेगा।

- (3) धारा 6 की उपधारा (3) के अधीन नवीनीकरण हेतु आवेदक को प्रपत्र संख्या 3 के साथ विहित शुल्क का चालान संलग्न कर अनुज्ञप्ति अधिकारी को प्रस्तुत करना होगा जिसमें अनुज्ञप्ति प्राधिकारी द्वारा अधिनियम की सम्बन्धित धारा के अन्तर्गत विहित प्रावधानों के समाधान के पश्चात नवीनीकरण किया जा सकेगा।

अनुज्ञा पत्र जारी करने/
नवीनीकरण हेतु शुल्क
एवं वैधता अवधि

5. (1) धारा 6 की उपधारा (1) के अधीन प्रथमवार दिये गये अनुज्ञा पत्र की वैधता तीन कैलेण्डर वर्ष तथा नवीनीकरण अनुज्ञा पत्र की वैधता दो कैलेण्डर वर्ष के लिए विधिमान्य होगी और इस अनुज्ञा पत्र की वैधता कैलेण्डर वर्ष के अंतिम दिवस (31 दिसम्बर) को समाप्त होगी।
- (2) उपर्युक्त नियम 4 के उपनियम (1) एवं (3) में निर्दिष्ट आवेदन-पत्रों के साथ विहित अनुज्ञप्ति शुल्क के मूल चालान की प्रति संलग्न करनी होगी।
- (3) अनुज्ञा-पत्र का नवीनीकरण निर्धारित प्रारूप पर आवेदन-पत्र व निर्धारित शुल्क के साथ (प्रपत्र संख्या-2) अनुज्ञा अवधि समाप्त होने से पूर्व पौधशाला से संबंधित पंद्रह दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त करने का प्रमाण-पत्र उपलब्ध कराने के उपरान्त ही नवीनीकरण किया जायेगा।
- (4) अधिनियम की धारा 6 की उपधारा (3) के अधीन विहित प्रावधानों के समाधान के उपरान्त ही नवीनीकरण किया जाएगा।
- (5) पौधशाला के क्षेत्रफल के अनुसार अनुज्ञा पत्र एवं नवीनीकरण शुल्क निम्नानुसार होगा:-

क्र० सं०	पौधशाला का क्षेत्रफल	विहित शुल्क		नवीनीकरण विलम्ब शुल्क सहित
		अनुज्ञा-पत्र	नवीनीकरण	
(1)	0.1 से 0.2 हैक्टेयर तक	2,000	1,000	1,500
(2)	0.2 हे० से अधिक एवं 1.0 हैक्टेयर तक	5,000	3,000	4,500
(3)	1.0 हैक्टेयर से अधिक किन्तु 2 हैक्टेयर तक	10,000	5,000	7,500
(4)	2 हैक्टेयर से अधिक	20,000	10,000	15,000

- (6) विनिर्दिष्ट अनुज्ञप्ति शुल्क की धनराशि आवेदक द्वारा लेखाशीर्षक "0401-फसल कृषि कर्म, 00-, 800-अन्य प्राप्तियाँ, 00-, 13-उद्यान विभाग की अन्य प्राप्तियाँ" के

अन्तर्गत चालान के माध्यम से कोषागार में जमा की जायेगी।

अनुज्ञा-पत्र का 6. (1)
निलम्बन/ निरस्तीकरण
की कार्यवाही, सुनवाई,
आदेश जारी करना एवं
अपील

- (7) अनुज्ञा-पत्र के नवीनीकरण के लिए आवेदन-पत्र उस वर्ष के, जिसके लिए अनुज्ञा पत्र का नवीनीकरण किया जाना अपेक्षित हो, पूर्ववर्ती वर्ष के 31 अक्टूबर तक जब तक कि सरकार द्वारा तिथि न बढ़ायी जाय, अनुज्ञप्ति प्राधिकारी को प्रस्तुत किया जायेगा।
- (8) नवीनीकरण हेतु आवेदन-पत्र के साथ धारा 4 के अधीन जारी किये गये अनुज्ञा पत्र की मूल प्रति भी संलग्न की जानी आवश्यक होगी।
- (9) उपनियम (7) में विनिर्दिष्ट तिथि के पश्चात् और 31 दिसम्बर तक प्रस्तुत किये गये अनुज्ञा पत्र के नवीनीकरण के आवेदन-पत्र पर अनुज्ञप्ति धारक को उपरोक्त उप नियम 5 में उल्लेखित नवीनीकरण हेतु विहित शुल्क का डेढ़ गुना जमा करना होगा।
- (1) अधिनियम की धारा 7 की उपधारा (1) के कारकों की पुष्टि हो जाने के फलस्वरूप अनुज्ञप्ति प्राधिकारी द्वारा अनुज्ञा धारक के अनुज्ञा पत्र का निलम्बन/निरस्तीकरण किया जा सकेगा।
- (2) अनुज्ञा पत्र की निलम्बन/निरस्तीकरण के आदेश निर्गत होने की दशा में अनुज्ञा पत्र धारक अपने अनुज्ञा पत्र की मूल प्रति अनुज्ञप्ति प्राधिकारी के कार्यालय में जमा करायेगा।
- (3) अनुज्ञा पत्र निलम्बन/निरस्तीकरण की दशा में संबंधित अनुज्ञा-पत्र धारक न ही किसी प्रतिकर की मांग करेगा और न ही अनुज्ञा-पत्र हेतु जमा किये गये किसी शुल्क की वापसी का हकदार होगा।
- (4) अनुज्ञप्ति प्राधिकारी को अधिनियम की धारा 4 की उपधारा (3) के अधीन अनुज्ञा पत्र जारी करने से अथवा धारा 6 की उपधारा (3) के अधीन नवीनीकरण से मना करने अथवा धारा 7 की उपधारा (1) के अधीन अनुज्ञा पत्र के निलम्बन/निरस्तीकरण का आदेश प्रत्येक दशा में लिखित रूप में सम्बन्धित अनुज्ञा-पत्र धारक को उपलब्ध कराना होगा।
- (5) निलम्बन की कार्यवाही के समर्थन में पर्याप्त कारणों का उल्लेख किया जाना आवश्यक होगा।
- (6) उप-नियम (4) में उल्लिखित प्रत्येक कार्यवाही के आदेश जारी करने से पूर्व अनुज्ञप्ति प्राधिकारी को आवेदक/अनुज्ञा-पत्र धारक को यथास्थिति 30 कार्य दिवस के भीतर सुनवाई का युक्तियुक्त अवसर देगा।
- (7) उप नियम (4) में उल्लिखित अनुज्ञप्ति प्राधिकारी के आदेश से असंतुष्ट होकर कोई भी आवेदक/अनुज्ञप्ति-पत्र धारक ऐसे

आदेश के संसूचित दिनांक से 30 दिन के भीतर अपीलीय अधिकारी के समक्ष अपील कर सकेगा;

परन्तु, यह कि अपीलीय प्राधिकारी इस उपधारा को विनिर्दिष्ट अवधि की समाप्ति के पश्चात् भी अपील ग्रहण कर सकेगा, यदि उसका समाधान हो जाए कि अपीलार्थी किसी युक्तियुक्त कारण से विनिर्दिष्ट अवधि में अपील नहीं कर सका था।

लेखा बही एवं रजिस्टर 7. (1)
का रख-रखाव एवं नयी
खोज का पेटेंट

अधिनियम की धारा 14 के अधीन पौधशाला स्वामी को पौधशाला के अन्तर्गत संचालित की जाने वाली गतिविधियों के रजिस्टर अनुरक्षित किया जाना आवश्यक होगा। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित रजिस्टर अनुरक्षित किये जाने होंगे:-

(क) मातृवृक्ष पंजिका (प्रपत्र-6)

(ख) मूलवृत्त एवं उपरोपिका का श्रोत (प्रपत्र-7)

(ग) विकय पंजिका (प्रपत्र-8)

(घ) निरीक्षण पंजिका (प्रपत्र-9)

(च) पौध रक्षा पंजिका (प्रपत्र-10)

(छ) 01 अप्रैल-31 मार्च तक की प्रतिवर्ष की सूचना तैयार किया जाय जिसमें कुल तैयार पौधों की संख्या तथा बिक्री का विवरण प्रजातिवार का उल्लेख हो। जिसकी एक प्रति अनुज्ञप्ति प्राधिकारी को प्रत्येक वर्ष के माह अप्रैल के अन्त में प्रस्तुत कर दिया जाए (प्रपत्र-11)।

(2) पौधशाला स्वामी उक्त सभी सूचनाओं/पंजीकाओं को दस वर्ष तक सुरक्षित रखेगा।

(3) अधिनियम की धारा 13 के अनुसार पौधशाला स्वामी द्वारा यदि किसी नई प्रजाति या तकनीक की कोई खोज की जाती है तो उनके द्वारा उसके पेटेंट की आवश्यक प्रक्रिया अपनाई जायेगी, जिसकी जानकारी अनुज्ञप्ति अधिकारी को भी दी जानी आवश्यक होगी।

पौधशाला का निरीक्षण 8. (1)
एवं जाँच

अधिनियम की धारा 15 की उपधारा (4) के अनुसार स्वस्थ एवं उच्च गुणवत्तायुक्त पौध उत्पादन सुनिश्चित करने हेतु निरीक्षक अधिकारी द्वारा पौधशाला का निरीक्षण किया जायेगा। निरीक्षणोपरान्त अपनी लिखित संस्तुति/निर्देश जारी करेगा।

(2) निरीक्षण संबंधित जिला के ज्येष्ठ उद्यान निरीक्षक/जिला/मुख्य उद्यान अधिकारी व अन्य विभागीय अधिकारियों द्वारा किया जायेगा।

(3) निरीक्षक अधिकारी निरीक्षण के समय कीट एवं व्याधियों की स्थिति को देखते हुए संक्रमित पौध एवं वृक्षों को निर्धारित

समय के भीतर नष्ट करने के निर्देश जारी कर सकेगा।

- (4) यदि पौधशाला स्वामी द्वारा निरीक्षक अधिकारी द्वारा विहित समय में नियम 14(3) में दी गयी प्रक्रिया का पौधशाला स्वामी द्वारा पालन नहीं किया जाता है, तो विभाग धारा 15 की उपधारा (3) के अनुसार स्वयं ऐसी पौध एवं वृक्षों को नष्ट करने की कार्यवाही कर सकेगा तथा इस प्रक्रिया में होने वाले व्यय का वहन पौधशाला स्वामी द्वारा किया जाएगा, जिसकी वसूली राजस्व विभाग के माध्यम से भू-राजस्व के बकाये की वसूली की भांति की जा सकेगी।
- (5) किसी भी प्रकार की जॉच सक्षम प्राधिकारी द्वारा अधिकृत अधिकारी जो श्रेणी-2 से न्यून स्तर का न हो, द्वारा की जायेगी।
- (6) सक्षम प्राधिकारी द्वारा अधिकृत अधिकारी पौधशाला का निरीक्षण कर, पौधशाला में उपलब्ध मातृवृक्षों की उपयोगिता/अनुपयोगिता की घोषणा करेगा। यदि वह इस बात से संतुष्ट हो जाता है कि अमुक मातृवृक्ष/प्रवर्धन में प्रयुक्त की जा रही सामग्री फल उद्योग के लिए उपयुक्त नहीं होगा। जिस हेतु निम्नलिखित कारण विद्यमान हो-
 - (क) गुणवत्ताहीन फल उत्पादन।
 - (ख) फलन क्षमता में कमी।
 - (ग) ऐसे कीट व्याधियों से ग्रस्त होना, जिसका उपचार न किया जा सके।
 - (घ) कोई अन्य कारण, जिसको सक्षम प्राधिकारी फल उद्योग के हित में उपयुक्त समझे।
- (7) पौधशाला स्वामी द्वारा उपरोक्त ऐसे मातृवृक्षों का उपयोग पौध प्रवर्धन में बिल्कुल नहीं किया जायेगा, ताकि इन नाशीकीट/व्याधियों के फैलाव/संकमण का प्रभाव अन्य मातृवृक्षों, नव प्रवर्धित पौधों में न हो सके। सक्षम प्राधिकारी द्वारा ऐसे अनुपयोगी/संकमित वृक्षों के पातन का आदेश जारी किया जाएगा, जिसका अनुपालन पौधशाला स्वामी सुनिश्चित करेंगे।
- (8) पौधशाला स्वामी, निरीक्षण अधिकारी के निरीक्षण के दौरान पौधशाला के संबंध में निरीक्षण पंजिका में अंकित निर्देशों की अनुपालन आख्या निरीक्षण पंजिका में अंकित करते हुए निश्चित अवधि में निरीक्षणकर्ता के माध्यम से अनुज्ञप्ति अधिकारी को भी प्रेषित करेगा।

पौध आवंटन हेतु 9. (1)
उपलब्धता की सूचना

अनुज्ञा-पत्र धारक/पौधशाला स्वामी अपने पौधशाला के बिक्री योग्य वर्षाकालीन पौध रोपण सामग्री की उपलब्धता की सूचना मई माह तक तथा शीतकालीन पौध रोपण सामग्री की

उपलब्धता अक्टूबर माह तक निदेशक, उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग को लिखित रूप में संबंधित जिला/मुख्य उद्यान अधिकारी के माध्यम से उपलब्ध कराएगा।

- (2) अनुज्ञा-पत्र धारक/पौधशाला स्वामी द्वारा बिक्री योग्य फल की पौधों की उपलब्ध करायी गयी सूचनाओं जैसे-पौधों की आयु, किस्मों, मान्यता प्रमाण-पत्र में निहित मातृवृक्षों की संख्या के अनुसार मानकानुसार बिक्री योग्य तैयार पौधों की संख्या, मान्यता/अनुज्ञा-पत्र की वैधता, आनुवांशिक विवरण के अन्तर्गत विभिन्न संस्थाओं/पौधशालाओं से प्राप्त किये गये मूलवृन्त (Root-stock) तथा उपरोपिका (Scion) आदि का भौतिक सत्यापन गठित विभागीय समिति द्वारा फल पौधशाला के अनुज्ञा पत्र में अंकित पते/स्थान पर किया जायेगा। जिसकी आख्या समिति निदेशक, उद्यान को उपलब्ध करायेगी।
- (3) समिति के सत्यापन के उपरान्त ही फल पौधशालाओं से फलपौधों की खुदान की कार्यवाही की अनुमति होगी। अन्यथा की स्थिति में ऐसे पौधशाला के पौधों के आवंटन पर विचार नहीं किया जायेगा।

अनुज्ञा पत्र की द्वितीय 10. (1) प्रति जारी करना

- (1) यदि कोई अनुज्ञा पत्र खो जाय या नष्ट हो जाय, फट जाय, विरूपित हो जाय या अन्य प्रकार से अपठनीय हो जाय तो इस नियमावली के नियम 5 के उपनियम (6) में विनिर्दिष्ट शीर्षक के अन्तर्गत चालान द्वारा कोषागार में रु. 500 मात्र की फीस जमा करने पर अनुज्ञा पत्र की दूसरी प्रति जारी की जा सकती है।
- (2) अनुज्ञा-पत्र की दूसरी प्रति जारी करने के लिए आवेदन पत्र प्रपत्र सं0-4 में दिया जायेगा और उसके साथ उपर्युक्त उपनियम-(1) में विनिर्दिष्ट फीस जमा करने का मूल चालान संलग्न करना आवश्यक होगा।
- (3) यदि किसी ऐसे अनुज्ञा-पत्र को, जिसे अनुज्ञा-पत्र खो जाने या नष्ट हो जाने के कारण प्रतिस्थापित करने के लिए अनुज्ञा पत्र की दूसरी प्रति अपेक्षित हो तो आवेदक प्रपत्र सं0-5 में क्षतिपूर्ति बाण्ड निष्पादित करेगा।
- (4) आवेदक अनुज्ञा-पत्र की दूसरी प्रति प्राप्त करने के लिए आवेदन-पत्र के साथ उस अनुज्ञा पत्र को जो फट जाय, विरूपित हो जाय या अन्य प्रकार से अपठनीय हो जाय, अनुज्ञा-पत्र प्राधिकारी को अर्पित करेगा।
- (5) जब कोई अनुज्ञा-पत्र खो जाय या नष्ट हो जाय तब अनुज्ञा-पत्र धारक/अनुज्ञा-पत्र धारक इस तथ्य को अनुज्ञा-पत्र की संख्या का उल्लेख करके स्थानीय महत्वपूर्ण समाचार-पत्रों में या यदि कोई स्थानीय समाचार पत्र न हो तो राज्य के भीतर महत्वपूर्ण समाचार पत्रों में तत्काल अधिसूचित करेगा।

पौधों की बिक्री, पैकिंग
एवं क्यू0आर0 टैगिंग
कोड लेबल लगाना

11. (1)

और उन समाचार-पत्र की जिनमें इस तथ्य को अधिसूचित किया जाय, कतरन को अनुज्ञा पत्र की दूसरी प्रति देने के लिए आवेदन-पत्र के साथ संलग्न किया जायेगा।

धारा 16 की उपधारा (1) के अधीन विक्रय के लिए अभिप्रेत फल के प्रत्येक पौधे पर समुचित रूप से क्यू0आर0 टैगिंग कोड लेबल लगाया जायेगा जिसमें पौधे से संबंधित समस्त जानकारीयों जैसे— फल पौधशाला का नाम, अनुज्ञा पत्र संख्या, फल के पौधों का प्रकार, पौधों में प्रयुक्त मूल वृन्त, पौधों की प्रजातियाँ व पौधों की आयु आदि का उल्लेख किया गया हो जिससे कोई भी किसान इसके माध्यम से पौधों से संबंधित समस्त जानकारी तत्काल प्राप्त कर सके।

(2) क्यू0 आर0 टैगिंग कोड लेबल को समुचित रूप से पौधों से बाँधा जायेगा।

(3) पौधशाला के मातृवृक्ष खण्ड में भी मातृवृक्षों पर समुचित रूप से क्यू0 आर0 टैगिंग कोड लगाया जाएगा।

(4) पौधशाला की एक क्यारी में एक ही प्रकार एवं प्रजाति का पौध रोपण/प्रवर्धन किया जायेगा। साथ ही उस क्यारी में प्रजाति के नाम का बोर्ड भी लगाया जायेगा।

(5) अनुज्ञापिधारक पौधशाला का नक्शा पौधशाला में रखेगा, जिसमें मातृवृक्षों की स्थिति तथा प्रकार एवं किस्में इंगित हो।

(6) पौध सामग्रियों के संबंध में शासकीय एवं राज्य में स्थापित गैर शासकीय सभी पौधशालाओं के लिए यह आवश्यक है कि वह जिन भी माध्यमों से पौध सामग्री खरीदें वे लाभप्रद हो यदि वह लाभप्रद न पाई जाये तो उनके लिए भी अधिनियम की धारा 18 के अंतर्गत कार्यवाही की जाएगी।

(7) पौधशाला स्वामी, आवंटित पौधों की पैकिंग संबंधित मुख्य एवं जिला उद्यान अधिकारी के प्रतिनिधि के समक्ष ही करेगा।

(8) अधिनियम की धारा 16 की उपधारा (5) के अनुसार यदि पौधशाला स्वामी अपनी फल पौधशाला के अतिरिक्त अन्य राज्य के किसी फल पौधशाला से फल की पौध बिक्री के प्रयोजन हेतु प्राप्त करता है, तो उसे उस पौधशाला स्वामी से रू0 100.00 (रू0 सौ मात्र) के स्टाम्प पेपर पर फल पौधों की आनुवांशिक विशिष्टताएँ एवं अपनाई गयी तकनीकों, कीट-व्याधि रहित होने आदि की स्वतः घोषणा प्राप्त कराना आवश्यक होगा, जिसको सत्यापन समिति के समक्ष पौधालय सत्यापन के दौरान प्रस्तुत करना होगा।

अनुज्ञा धारक के कर्तव्य 12. (1)

उत्पादन और विक्रय के लिए उपरोपिका (scion) या मूलवृन्त (root stock) से संबंध अनुज्ञा पत्र में अंकित किस्मों के फल के पौधों का ही प्रवर्धन करेगा, जैसा अनुज्ञापि प्राधिकारी निर्देश

दे।

- (2) प्रत्येक मूलवृन्त (root stock) और उपरोपिका (scoin) के मूल स्रोत का पूर्ण अभिलेख रखेगा, जिसमें मूलवृन्त का वानस्पतिक नाम और स्थानीय नाम, यदि कोई हो, भी होगा।
- (3) फल की पौध एवं अन्य पौध जिनका वानस्पतिक प्रवर्धन किया जाना है, का मातृवृक्ष खण्ड रखेगा जिसके अंतर्गत उसी प्रकार के प्रजातिवार पौध उच्च प्रबन्धन में अनुरक्षित होंगी। पौधों का प्रवर्धन उन्हीं फसल एवं प्रजातियों का किया जाय जिनका उन्हें अनुज्ञा पत्र प्राप्त हुआ हो।
- (4) केवल उन्हीं पौधों एवं प्रजातियों का वानस्पतिक प्रवर्धन करेगा, जिसका उसके पास मातृवृक्ष हो तथा पौधशाला में प्रवर्धित पौधों की अधिकतम संख्या मानकानुसार मातृवृक्ष खण्ड (mother block) में ऐसे प्रजाति/पौध की संख्या पर निर्भर करेगी।
- (5) फल पौध प्रवर्धन हेतु नवीनतम अनुमोदित तकनीकों का उपयोग करेगा तथा इस प्रयोजन हेतु सक्षम प्राधिकारी द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन करेगा।
- (6) प्रवर्धित फल की पौधों में अन्य प्रजाति/पौध का मिश्रण नहीं करेगा। अतः प्रवर्धन के समय तकनीकों का सावधानीपूर्वक पालन करना होगा।
- (7) फल की पौधों के उत्पादन के लिए प्रयुक्त पौधशाला स्थल एवं मातृवृक्ष को कीट एवं व्याधियों से मुक्त रखेगा।
- (8) केवल ऐसे फल की पौधों का विक्रय या वितरण करेगा, जो किसी भी प्रकार के कीट एवं रोगों से मुक्त हो।
- (9) अधिनियम में विहित उपबंधों में उल्लिखित अनुबन्धों या स्वतः घोषणा के अधीन ही पौध रोपण सामग्री किसानों, उद्यान विभाग एवं अन्य विभागों को विक्रय करेगा।
- (10) संबंधित जिला के मुख्य/जिला उद्यान अधिकारी एवं पौधशाला विकास अधिकारी अपने जनपद की माँग के अनुसार केवल ऐसी किस्म के फल पौधों का प्रवर्धन करने हेतु अपनी अनुसंशा अनुज्ञप्ति प्राधिकारी को प्रेषित करेंगे।

अनुज्ञप्ति प्राधिकारी की 13. (1) शक्तियाँ

- (1) अधिनियम की धारा 20 के अंतर्गत किसी अनुज्ञा प्राप्त पौधशाला स्वामी से उसके स्वामित्व में या उसके द्वारा चलाई जा रही फल पौधशाला के संबंध में ऐसी सूचना प्रस्तुत करने की अपेक्षा कर सकेगा जिसे वह विनिर्दिष्ट करें।
- (2) यह समाधान करने के लिए कि अधिनियम और इसके अधीन बनाए गये नियमों की अपेक्षाओं का अनुपालन किया जा रहा है, किसी फल पौधशाला में प्रवेश कर सकेगा और उसका और उसमें स्थित पौधों एवं उससे संबंधित लेखा बही और अभिलेखों

का निरीक्षण कर सकेगा या कर सकेगी।

- (3) फल के पौधों का नमूना ले सकेगा और उसका विश्लेषण, परीक्षण या जांच इस प्रयोग के लिए निश्चित की गई किसी प्रयोगशाला में कर सकेगा।

सदभाव से किये गये 14. (1)
कार्यों का संरक्षण

इस नियमावली के अधीन सदभावपूर्वक किये या किये जाने के लिए आशयित किसी कार्य के लिए किसी व्यक्ति के विरुद्ध कोई वाद, अभियोजन या अन्य विधिक कार्यवाही संस्थित नहीं की जा सकेगी।

- (2) सदभाव से किये गये या किये जाने के लिए आशयित किसी कार्य से हुई क्षति या सम्भाव्य क्षति के लिए राज्य सरकार के विरुद्ध कोई वाद या विधिक कार्यवाही नहीं की जा सकेगी।

किसानों का प्रशिक्षण

15. (1) अधिनियम की धारा 22 के अंतर्गत राज्य के किसानों को क्षेत्र विशेष की जलवायु की अनुकूलता के अनुसार औद्यानिक क्रियाकलापों विशेषकर फल पौधों की पौधशाला तैयार करते समय अपनाई जाने वाली उन्नत तकनीकों, बारीकियों एवं विशिष्टियों से भिन्न कराने के लिए विभाग द्वारा आस-पास की राजकीय फल पौधशालाओं में शैक्षिक भ्रमण एवं प्रशिक्षण कराया जाएगा जिससे किसान यदि स्वयं किसी फल पौधशाला से फल पौध कय करना चाहे, तो वह विशिष्ट एवं गुणवत्तायुक्त पौध रोपण सामग्री बिल सहित खरीदने में सक्षम हो सके।

परिशिष्ट-1

पौधशाला स्वामी द्वारा स्वतः घोषणा

मैं, श्री/सुश्री/श्रीमती.....पुत्र/पुत्री/पत्नी.....
निवासी..... घोषणा करता/करती हूँ कि मैं अपनी
फल पौधशाला में उत्पादित फल के पौधों का प्रवर्धन एवं विक्रय निम्नलिखित घोषणाओं के अधीन
करूँगा/करूँगी:-

- 1- मेरे द्वारा उन्हीं प्रजातियों के फल पौधों के मूलवृन्त एवं उपरोपिका का प्रयोग पौध प्रवर्धन और बिक्री के लिए किया जायेगा, जिसके लिए फल पौधशाला अनुज्ञा पत्र जारी किया गया है तथा अनुज्ञाप्ति प्राधिकारी द्वारा जारी निर्देश के अनुसार किये जायेंगे।
- 2- अनुज्ञाप्ति प्राधिकारी द्वारा प्रदत्त प्रारूप में सम्पूर्ण अभिलेख अनुरक्षित रखे जायेंगे।
- 3- मेरे द्वारा फल पौधशाला में उगाये जाने वाले मूलवृन्त एवं मातृवृक्षों का ले-आउट तैयार किया जायेगा।
- 4- मेरे द्वारा फल पौधशाला प्रक्षेत्र के साथ-साथ पौध प्रवर्धन में प्रयुक्त होने वाले मातृवृक्षों को कीट एवं व्याधियों से मुक्त रखा जायेगा।
- 5- मेरे द्वारा बिक्री के समय की जाने वाली पैकिंग में पैक की गई प्रजाति/प्रजातियों की टैगिंग की जायेगी, जिसमें इस प्रजातियों के प्रवर्धन में उपयोग की गई मूलवृन्त एवं उपरोपिका का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया जायेगा।
- 6- मेरे द्वारा यह भी घोषणा की जाती है कि जिन पौधों का मेरे द्वारा विक्रय या वितरण किया जायेगा वह उसी प्रजाति के होंगे जिसकी संस्तुति मेरे द्वारा की गयी है तथा वह पूर्ण रूप से कीट एवं व्याधियों से मुक्त होंगे अन्यथा किसान के समस्त प्रतिकरों का वहन मेरे द्वारा किया जायेगा। प्रतिकर का निर्धारण अनुज्ञाप्ति प्राधिकारी अथवा उनके द्वारा नामित मुख्य/जिला उद्यान अधिकारी की अध्यक्षता में गठित कमेटी द्वारा किया जाएगा।
- 7- मेरे द्वारा फल पौधशाला में एक पंजिका अनुरक्षित रखी जायेगी, जिसमें किसी भी व्यक्ति या संस्था को बेची/वितरित की गई फल के पौधों के प्रवर्धन उपयोग में लाई गई मूलवृन्त एवं उपरोपिका का नाम अंकित होगा साथ ही उस व्यक्ति या संस्था का भी नाम एवं पता दर्ज होगा, जिसको फल का पौधा बेचा गया है। मेरे द्वारा इन पंजिकाओं को कम से कम 10 वर्षों तक अनुरक्षित रखा जायेगा।
- 8- मेरे द्वारा फल पौधशाला निरीक्षण के उपरान्त फल के पौधों के स्वस्थ एवं रोग रहित पौधों के उत्पादन एवं विशिष्टताओं के संबंध में अनुज्ञाप्ति प्राधिकारी या उनके प्रतिनिधि के दिये गये निर्देशों का अनुपालन किया जायेगा।
- 9- मैं गुणवत्तायुक्त पौध प्रवर्धन एवं उनके विक्रय दर के लिए संस्तुति के संबंध में उत्तराखण्ड सरकार द्वारा निर्धारित शर्तों का पालन करूँगा/करूँगी।
- 10- फल पौधशाला में किये जा रहे कार्यों जैसे-पौधों के प्रवर्धन में प्रयुक्त मातृवृक्षों, मूलवृन्तों, कीट एवं व्याधियों, पौधों के वृद्धि एवं विकास, पौधों की गुणवत्ता एवं पौधों की आनुवांशिक विशिष्टियों के संबंध में निरीक्षण किये जाने पर मुझे किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति नहीं होगी। साथ ही निरीक्षण के दौरान कीट-व्याधियों से ग्रस्त पौधों को निकालने या नष्ट करने के सुझाव दिये जायेंगे तो मैं ऐसे पौधों को नष्ट करने के लिए तैयार रहूँगा/रहूँगी, जिसके लिए मेरे द्वारा किसी प्रकार के प्रतिकर की माँग नहीं की जायेगी।
- 11- मेरे द्वारा फल पौधशाला के पंजीकरण में सम्मिलित फसलों के अतिरिक्त अन्य किसी फसल का उत्पादन नहीं किया जायेगा।
- 12- मेरे द्वारा उत्तराखण्ड फल पौधशाला (विनियमन) अधिनियम 2019 में उल्लेखित उपबन्धों का किसी भी रूप में उल्लंघन होता है तो अधिनियम में वर्णित दण्ड का भागीदार बनूँगा/बनूँगी।

पौधशाला स्वामी के हस्ताक्षर.....

पौधशाला स्वामी का नाम.....

पौधशाला स्वामी के पिता/पति का नाम.....

फल पौधशाला का नाम एवं पता.....

दिनांक.....

प्रपत्र सं०-1

(नियम-4 (क) दिखिये)

उत्तराखण्ड फल पौधशाला (विनियमन) अधिनियम, 2019 के अधीन लाइसेंस के लिए आवेदन पत्र:-

- 1- आवेदन/आवेदकों का नाम:-
पिता/पति का नाम:-
पता:-
- 2- (क) फल पौधशाला का नाम एवं पता (डाकघर, थाना, रेलवे स्टेशन सहित):-
(ख) पौधशाला की मोटर मार्ग से दूरी (मीटर में):-
- 3- फल पौधशाला का क्षेत्रफल (है०), खसरा सं० और भूमि का स्वामी (राजस्व की प्रति संलग्न कीजिए) और फल पौधशाला की सीमा का उल्लेख (नक्शा संलग्न)
- 4- उपलब्ध किस्मों सहित मातृ पौधों की आयु और संख्या

क्र० सं०	फलों के प्रकार	प्रजाति	उम्र	कुल मातृवृक्षों की संख्या	मातृ वृक्ष और पौधों की स्थिति	पौध प्राप्ति का ज्ञान व स्रोत	अभ्युक्ति
1	2	3	4	5	6	7	8

- 5- उत्पादन के लिए अभिप्रेत फल के पौधों का प्रकार और किस्म।

क्र०सं०	फलों के प्रकार	प्रजाति
1	2	3

- 6- सिंचाई का स्रोत:-
- 7- उस भूमि की मिट्टी एवं जलवायु का प्रकार जिसमें फल पौधशाला स्थित है।
- 8- कोषागार का नाम और यथाविधि, प्रात्यांकित कोषागार चालान(संलग्न) की संख्या, दिनांक और राशि।
- 9- अवधि जिसके लिए अनुज्ञा पत्र अपेक्षित है
- 10- मैं/हम घोषणा करता /करती हूँ कि यहाँ प्रस्तुत की गयी सूचना का विवरण मेरे/हमारे ज्ञान एवं विश्वास में सत्य है।
- 11- यदि मुझे/हमें मूलवृन्त या उपरोपिका की आवश्यकता होगी तो, मैं/हम उसे अधिकारिक प्राधिकारी से कय करेंगे।
- 12- मैंने/हमने, उत्तराखण्ड फल पौधशाला (विनियमन) अधिनियम, 2019 एवं नियमावली का भली-भाँति अध्ययन कर लिया है। मैं/हम इसमें निहित उपबन्धों का पालन करने का वचन देता/देती हूँ/देते हैं।

आवेदक के हस्ताक्षर

दिनांक:-

अवधेय- यह आवेदन पत्र हस्ताक्षरित किया जायेगा:-

- (1) जहाँ फल पौधशाला किसी प्राइवेट व्यक्ति/व्यक्तियों द्वारा चलाई जा रही हो, वहाँ उसके स्वामी व स्वामियों में से किसी एक द्वारा या अन्य सक्षम अधिकारी/प्रभारी।
- (2) जहाँ फल पौधशाला किसी निगम/सार्वजनिक उपक्रम द्वारा चलाई जा रही हो, वहाँ उसके महाप्रबन्धक/प्रबन्धक द्वारा या अन्य सक्षम अधिकारी/प्रभारी।
- (3) जहाँ फल पौधशाला सहकारी समिति द्वारा चलाई जा रही हो, वहाँ उसके सचिव द्वारा।

प्रपत्र संख्या-1(क)

(नियम-4 (ख) देखिये)

सत्यापन अधिकारी हेतु प्रारूप

प्रमाणित किया जाता है कि मेरे द्वारा मै०..... पौधशाला का निरीक्षण दिनांक.....को किया गया। यह पौधशाला (नर्सरी) श्री/श्रीमती..... पुत्र/पुत्री/पत्नी द्वारा संचालित की जा रही है/जाएगी।

पौधशाला से संबंधित आख्या निम्नलिखित है-

1. आवेदक के पास पौधशाला अर्न्तगत है० क्षेत्र है।
2. सत्यापन के समय मातृवृक्षों की स्थिति निम्नलिखित है-

क्र० सं०	मातृ फल वृक्षों के प्रकार	प्रजाति	उत्पादन एवं गुणवत्ता	वृक्षों की सं०	उम्र	मातृ वृक्ष और पौधों की स्थिति	अभ्युक्ति
1	2	3	4	5	6	7	8

3. नर्सरी स्वामी द्वारा पौधालय एवं मातृवृक्षों का नक्शा जो सुरक्षित रखा गया है।
4. पौधालय कीट/बीमारियों से मुक्त/मुक्त नहीं रखा गया है।
5. मातृवृक्षों की स्थिति अच्छी/अच्छी नहीं रखी गई है।
6. मृदा पौधशाला उत्पादन हेतु उपयुक्त/अनुपयुक्त है।
7. अनुज्ञा पत्र पौधशाला स्थापना/संचालन हेतु दिया जाना उचित है/नहीं है, कारण निम्नलिखित है
8. आवेदक द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना सही है/नहीं है।
9. सिंचाई के साधन व अन्य सूचनाएँ यदि कोई हो
10. सत्यापन के आधार पर पौधशाला हेतु अनुज्ञा प्रमाण पत्र जारी करने हेतु मैं संस्तुति दी/नहीं दी जाती है।

दिनांक.....

सत्यापन अधिकारी का हस्ताक्षर
पदनाम
कार्यालय की मुहर

प्रपत्र संख्या-2
(नियम-4(क) देखिये)

उत्तराखण्ड फल पौधशाला (विनियमन) अधिनियम, 2019 के अधीन विहित निबन्धन एवं शर्तें

अनुज्ञा-पत्र संख्या:-

- 1- अनुज्ञा पत्र धारक का नाम और पता-
- 2- फल पौधशाला की स्थिति-
- 3- इस अनुज्ञा-पत्र के अधीन उत्पादित किये जाने वाले फल के पौधों का प्रकार और किस्म/
अनुज्ञा-पत्र उत्तराखण्ड फल पौधशाला (विनियमन) अधिनियम 2019 के उपबन्धों के अधीन दिया जाता है और वह अधिनियम के अधीन बनाये गये नियम में विनिर्दिष्ट निबन्धनों और शर्तों के अधीन है।

स्थान:-

दिनांक:-

विधिमान्यता अवधि	अनुज्ञा पत्र शुल्क (रु0)	नवीनीकरण शुल्क (रु0)	पौधशाला का क्षेत्रफल	अनुज्ञाप्ति प्राधिकारी अधिकारी का हस्ताक्षर
1	2	3	4	5

निबन्धन और शर्तें

- 1- फल पौधशाला की मृदा, जलवायु एवं फल पौध प्रवर्धन के लिए निर्धारित शर्तों को ध्यान में रखते हुए अनुज्ञाप्ति की जायेगी।
- 2- फल पौधशाला में फल के पौधों के वानस्पतिक उत्पादन के लिए मातृ पौधों और मूल वृन्त हैं।
- 3- मातृ पौधे और मूलवृन्त रोग और नाशीकीट से मुक्त हैं।
- 4- रोग और नाशीकीट के संक्रमण को रोकने के लिए पौध संरक्षण प्रक्रिया अपनायी जायेगी।
- 5- अनुज्ञा पत्र को सदैव फल पौधशाला के परिसर में रखा जायेगा। अनुज्ञाप्ति प्राधिकारी के मांगने पर निरीक्षण और जाँच करने के लिए प्रस्तुत किया जायेगा।
- 6- अनुज्ञाप्तिधारक फल पौधशाला के फल के पौधों, मातृ वृक्षों और मूलवृन्तों में किसी रोग या नाशीकीट के फैलने और उस रोग और नाशीकीट का नियंत्रण करने के लिए की गयी कार्यवाही की सूचना अनुज्ञाप्ति प्राधिकारी को देगा।
- 7- अनुज्ञाप्तिधारक केवल उस पौधों का उत्पादन और विक्रय करेगा जिनके लिए अनुज्ञा पत्र दिया गया है।
- 8- अनुज्ञाप्तिधारक द्वारा तैयार की गयी और विक्रय के लिए प्रस्तुत की गयी कलमें निम्नलिखित विशिष्टियों की होगी:-
 - (क) किसी फल के पौधे की आयु फल के पौधे की यथास्थिति कलम लगाने या उसके बीज बोने के समय से तीन वर्ष से अधिक न हो ;
 - (ख) मूलवृन्त और उपरोपिका पूरी तरह से मिले हुए हो ;
 - (ग) मूलवृन्त से उपरोपिका का संयोजन भू-तल से 30 सेमी0 से ऊपर नहीं होगा ;
- 9- अनुज्ञाप्तिधारक उत्तराखण्ड फल पौधशाला (विनियमन) अधिनियम, 2019 में विहित प्रपत्रों में विभिन्न अभिलेख रखेगा।
- 10- अनुज्ञा पत्र धारक, उत्तराखण्ड फल पौधशाला (विनियमन) अधिनियम, 2019 और उसके अधीन बनाये गये नियमों के विभिन्न उपबन्धों का पालन और अनुपालन करेगा और व्यतिक्रम या उल्लंघन करने की स्थिति में उसे अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (1) के अधीन यथा स्थिति प्रथम दोष सिद्ध होने पर रु0 50000 तक का जुर्माना या 06 माह की कारावास एवं द्वितीय दोष सिद्ध होने की दशा में 6 माह का कारावास तथा रु0 50000.00 जुर्माना से दण्डित किया जायेगा। साथ ही परिशिष्ट-1 के प्रस्तर-6 के लिए भी उत्तरदायी होगा।
- 11- ऐसे फलों के पौधों को, जो मानक के अनुसार नहीं हों, अनुज्ञाप्ति प्राधिकारी या उसके द्वारा प्राधिकृत किसी अधिकारी की उपस्थिति से नष्ट कर देना होगा।

प्रपत्र संख्या-3

(नियम-4(ग) देखिये)

उत्तराखण्ड फल पौधशाला (विनियमन) अधिनियम, 2019 की धारा 5 के अधीन अनुज्ञप्ति के नवीनीकरण के लिए आवेदन-पत्र:

- 1- (1) आवेदक का नाम, पिता/पति का नाम व पता:-
(2) फल पौधशाला स्वामी/स्वामियों का/के नाम, पिता का नाम और पता:-
- 2- फल पौधशाला का नाम और स्थिति तथा डाक पता:-
- 3- (1) ऐसे अनुज्ञा पत्र की, जिसका नवीनीकरण वांछित हो, संख्या और दिनांक:-
(2) वर्तमान अनुज्ञा पत्र की समाप्ति का दिनांक:-
- 4- ऐसे फल के पौधों के जो वर्तमान अनुज्ञा पत्र जारी किये जाने या नवीनीकरण के पश्चात् उत्पादित किये जा रहे हो, प्रकार और किस्म में किसी परिवर्तन का ब्योरा।
- 5- जमा की गयी फीस की राशि, कोषागार का नाम (सम्यक रूप से प्राप्तांकित संलग्न) कोषागार चालान की संख्या और दिनांक:-
- 6- अवधि जिसके लिए अनुज्ञा पत्र का नवीनीकरण वांछित है।
- 7- अन्य कोई सूचना जिसे/जिन्हें आवेदक देना चाहें।
- 8- मैं/हम घोषणा करता/करती हूँ/करते हैं कि आवेदन में दी गयी सूचना/विवरण, मेरी/हमारी सर्वोत्तम जानकारी और विश्वास में सत्य है।
- 9- मैं/हम उत्तराखण्ड फल पौधशाला (विनियमन) अधिनियम, 2019 और इसके अधीन बनाये गये नियमों के उपबन्धों और ऐसे निर्देशों का भी जिन्हें अनुज्ञप्ति प्राधिकारी उक्त अधिनियम और नियमावली के अधीन समय-समय पर दें, पालन करने का वचन देता/देती हूँ/देते हैं।

दिनांक-

आवेदक/आवेदकों के हस्ताक्षर

अवधेय:-यह आवेदन-पत्र हस्ताक्षरित किया जायेगा:-

- (1)- जहाँ फल पौधशाला किसी प्राइवेट व्यक्ति/व्यक्तियों द्वारा चलाई जा रही हो, वहाँ उसके फल पौधशाला स्वामी/स्वामियों में से किसी एक स्वामी द्वारा,

या

- (2) जहाँ फल पौधशाला किसी निगम/सार्वजनिक उपक्रम द्वारा चलाई जा रही हो, वहाँ महाप्रबन्धक या प्रबन्धक द्वारा,

या

- (3) जहाँ फल पौधशाला किसी सहकारी/समिति द्वारा चलाई जा रही हो, वहाँ सचिव द्वारा।

प्रपत्र संख्या-4

(नियम-10 देखिये)

उत्तराखण्ड फल पौधशाला (विनियमन) अधिनियम, 2019 की धारा 5 के अधीन अनुज्ञा पत्र की दूसरी प्रति जारी करने के लिए आवेदन-पत्र:

सेवा में,

अनुज्ञाप्ति प्राधिकारी।

महोदय,

मैं/हम पुत्र/पुत्री (पुत्रियों) श्री निवासी
..... डाकघर थाना जिला.....
बयान करता हूँ/करते हैं कि मेरा/हमारा अनुज्ञा पत्र संख्या धारा के अधीन
दिनांक..... को समाप्त होने वाली अवधि के लिए निम्नलिखित परिस्थितियों में दिया गया।
(जहाँ उन परिस्थितियों का उल्लेख कीजिए जिनमें अनुज्ञा पत्र खो गया/नष्ट हो गया/क्षतिग्रस्त हो
गया/विरूपित हो गया/अपठनीय हो गया था)

2- अतएव मैं/हम आपसे अनुरोध करता/करती हूँ/करते हैं कि आप मुझे/हमें उन्हीं निबन्धनों
और शर्तों पर जिन पर उपर्युक्त स्वीकृत मूल अनुज्ञा पत्र दिया गया था, अनुज्ञा पत्र की दूसरी प्रति
जारी कर दें।

3- मैं/हम एतद्वारा रुपये (..... रुपये) की विहित फीस देने के सबूत में कोषागार
चालान संलग्न करता/करती हूँ/करते हैं।

4- मैं/हम एतद्वारा सत्यनिष्ठा से घोषणा करता हूँ/करते हैं कि इसमें दिया गया विवरण या दी
गयी सूचना मेरी/हमारी सर्वोत्तम जानकारी/विश्वास में सत्य है।

5- मैं/हम इसके साथ मूल अनुज्ञा पत्र (जब अनुज्ञा पत्र खो या नष्ट हो गया हो) को भी अभ्यर्पित
करता/करती हूँ/करते हैं।

साक्षी (1)

साक्षी (2)

(यहाँ दो साक्षियों का नाम और पता तथा उनका पूरा हस्ताक्षर होना चाहिए)

भवदीय

आवेदक/आवेदकों के हस्ताक्षर

दिनांक:-

समुचित धारा उल्लिखित और रेखांकित की जाय।

अवधेय:- आवेदन-पत्र में जो शब्द आवश्यक न हो, उन्हें काट दिया जाय।

यह आवेदन पत्र हस्ताक्षरित किया जायेगा-

(1)- जहाँ फल पौधशाला किसी प्राइवेट व्यक्ति (व्यक्तियों) द्वारा चलाई जा रही हो, वहाँ उसके स्वामी
या स्वामियों में से किसी एक स्वामी द्वारा,

या

(2)- जहाँ फल पौधशाला किसी निगम/सार्वजनिक उपक्रम द्वारा चलाई जा रही हो, वहाँ महाप्रबन्धक
या प्रबन्धक द्वारा या

(3)- जहाँ फल पौधशाला किसी सहकारी समिति द्वारा चलाई जा रही हो, वहाँ सचिव द्वारा।

प्रपत्र संख्या-5

(नियम-10 देखिये)

शपथ पत्र

सेवा में,

.....

.....

.....

उत्तराखण्ड फल पौधशाला (विनियमन) अधिनियम, 2019 के अधीन मुझे/हमें दिये गये अनुज्ञा पत्र संख्या दिनांक जिसे मैंने/हमने खो दिया है, कि द्वितीय प्रति आज दिनांक को अनुज्ञप्ति अधिकारी द्वारा दिये जाने के प्रतिफल में मैं/हम एतद्वारा स्वयं मेरे/हमने उत्तराधिकारी, निष्पादन और प्रशासक ऐसी किसी हानि या क्षति के लिए जो मूल अनुज्ञा पत्र का उपयोग करने वाले किसी व्यक्ति के कारण हो सकती है, उत्तराखण्ड सरकार को क्षतिपूर्ति करने के लिए सहमत हूँ/हैं और मैं/हम अनुज्ञप्ति प्राधिकारी को मूल अनुज्ञा पत्र जब भी वह मुझे/हमें मिल जायेगा वापस करने का भी वचन देता हूँ/देते हैं,

और मैं/हम एतद्वारा आगे भी सहमत हूँ/हैं कि राज्य सरकार उपर्युक्त के अनुसार मुझसे/हमसे समस्त हानि या क्षति को भू-राजस्व को बकाया के रूप में वसूल करने की हकदार होगी।

दिनांक 20 को में हस्ताक्षरित किया गया।
(निष्पादी) द्वारा हस्ताक्षरित किया गया।

निम्नलिखित की उपस्थिति में:-

1-

2-

पक्ष

टिप्पणी:- इस क्षति पूर्ति अनुबन्ध पत्र को उचित मूल्य के न्यायाधिकेतर स्टाम्प पत्र मूल्य पर निष्पादित किया जायेगा।

प्रपत्र संख्या-6

मातृवृक्षों की पंजिका

(नियम-7(क) देखियें)

पौधशाला का नाम अनुज्ञा पत्र संख्या

मातृवृक्ष का प्रकार और किस्म	मातृवृक्षों की संख्या	प्राप्ति का स्रोत	प्राप्ति वर्ष	फल उत्पादन की क्षमता	फल की गुणवत्ता	निरीक्षण अधिकारी की टिप्पणी
1	2	3	4	5	6	7

प्रपत्र संख्या-7

मूलवृन्त एवं उपरोपिका स्रोत पंजिका

(नियम-7(ख) देखियें)

पौधशाला का नाम अनुज्ञा पत्र संख्या

दिनांक	मूलवृन्त प्राप्ति का स्रोत	उपरोपिका प्राप्ति का स्रोत	तैयार पौधों की संख्या	निरीक्षण अधिकारी की टिप्पणी
1	2	3	4	5

प्रपत्र संख्या-8

(नियम-7(ग) देखियें)

विक्रय/नगद रसीद

पौधशाला का नाम अनुज्ञा पत्र संख्या

क्र० सं०	विक्रेता का नाम व पता	विक्रीत पौध के प्रकार व प्रजाति	प्रयुक्त मूलवृन्त	विक्रीत पौधों की संख्या	पौधों की दर	रसीद संख्या व दिनांक	अभ्युक्ति
1	2	3	4	5	6	7	8

प्रपत्र संख्या-9

(नियम-7(घ) देखियें)

निरीक्षण पंजिका

पौधशाला का नाम अनुज्ञा पत्र संख्या

क्र० सं०	निरीक्षण की तिथि	निरीक्षक अधिकारी का नाम व पदनाम	निरीक्षक अधिकारी के निर्देश	पौधशाला स्वामी द्वारा अनुपालन
1	2	3	4	5

प्रपत्र संख्या-10

(नियम-7(च) देखियें)

पौध रक्षा पंजीका

पौधशाला का नाम अनुज्ञा पत्र संख्या

क्र० सं०	दिनांक	कीटनाशी/बीमारियों के नाम	नियन्त्रण (नाशीजीव रसायनों के नाम व मात्रा)	अभ्युक्ति
1	2	3	4	5

प्रपत्र संख्या-11
(नियम-7(ग) देखिये)
उत्पादन एवं विक्रय का वार्षिक विवरण

पौधशाला का नाम अनुज्ञा पत्र संख्या
 दिनांक से तक

क्र० सं०	फल पौध का प्रकार व प्रजाति	उत्पादित पौध की संख्या			विगत वर्ष का अवशेष	कुल विक्रीत पौधों की संख्या	31 मार्च को अवशेष पौध
		बिक्री योग्य	अबिक्री योग्य	कुल			
1	2	3	4	5	6	7	8

आज्ञा से,
 आर० मीनाक्षी सुन्दरम्,
 सचिव।

In pursuance of the provisions of clause (3) of Article 348 of 'the Constitution of India', the Governor pleased to order the publication of the following English translation of Notification No. 44/XIII-3/2022-05(08)/2017, dehradun dated January 07, 2022 for general information:

NOTIFICATION

January 07, 2022

No. 44/XIII-3/2022-05(08)/2017—In exercise, the powers conferred by section 23 of the Uttarakhand Fruit Nurseries (Regulation) Act, 2019, the Governor is pleased to makes the following rules :-

In exercise, the powers conferred by section 23 of the Uttarakhand Fruit Nurseries (Regulation) Act, 2019, the Governor is pleased to makes the following rules:-

The Uttarakhand Fruit Nurseries (Regulation) Rules, 2021

**Short title and
Commencement**

1. (1) These rules may be called the 'Uttarakhand Fruit Nurseries (Regulation) Rules, 2021'.
- (2) It shall come into force at once.

Definitions

- 2- In these rules, unless there is anything argument in the subject or context:-

- (a) "Act" means the Uttarakhand Fruit Nurseries (Regulation) Act 2019;
- (b) "Calendar Year" means the period of 12 months from 1st January to 31st December;
- (c) "Form" means the Form enclosed to these rules;
- (d) "Section" means section of the Act;
- (e) "Appellate Authority" means the Secretary, Agriculture and Farmers Welfare, Uttarakhand authorized by the State Government or any officer nominated by him, who is not below the rank of Additional Secretary, to hear appeals under this Act;
- (f) "Competent Authority" means an officer appointed/enrolled by the State Government under this Act to perform the desired work, by notification in the Official Gazette;
- (g) "Licence" means a licence granted by the Licensing Authority under this Act;
- (h) "Prescribed" means prescribed by rules framed under this Act;
- (i) "Scion/budwood" means a portion of a fruit plant which is grafted/budded on rootstock;
- (j) Fruit Nursery means any place where propagation, management and sale of fruit plant is done in the regular course of business and it also includes commercial tissue culture units/labs and nurseries managed by the Government;
- (k) "Fruit plant" means any plant, which may produce edible fruits or nut fruit and includes gootee, seedling, grafts, suckers, layers, rhizomes and scion of any such plant;
- (l) "Inspection Officer" means a technical officer of the department, who is not below the rank of Group-I officer;
- (m) "Director" means the Director, Horticulture and Food Processing, Uttarakhand;
- (n) "Licensing Authority" means the Director, Horticulture and Food Processing Chaubatia, Ranikhet, Almora;
- (o) "Nursery Owner" means in relation to a fruit nursery, the person who, or authority which has the ultimate control over the affairs of such fruit nursery and it also includes a manager of nursery, managing director, managing agent, any other person incharge of such fruit nursery or the controlling authority (ADO/Superintendent/Nursery Development Officer/District/ Chief Horticulture Officer or Nursery In charge) of a Government nursery;
- (p) "State Government" means the Government of the State of Uttarakhand;
- (q) "Compensation" means the cost of the plants planted by the farmer and the amount of money spent on their management;

**Licence of the fruit
nursery and conditions
and eligibility for
issuing licence**

- (r) Words and expressions used herein are not defined but defined in the Uttarakhand Fruit Nurseries (Regulation) Act, 2019 shall have the same meanings as defined in that Act;
3. Issuance of licence is under the provisions given in sub section (3) of section 4 and section 5 of the Act and renewal of licence is under the provisions of sub section (1) of section 6 of the Act are subject to the following terms and conditions;
- (i) All existing fruit nurseries in the state shall be required to obtain a fresh licence under sub section (1) of section 3 of the Act within three months from the commencement of the rules;
- (ii) It shall be necessary for the nursery owner to have general educational knowledge related to nurseries;
- (iii) Nursery owner/license holder of 1.0 hectare or more than 1.0 hectares shall be required to submit a certificate of 15 days training received from the Department of Horticulture, any institute of Indian Council of Agricultural Research or State Agriculture/Horticultural Universities and it shall be recommended by the Department in respect of nursery management;
- (iv) The nursery owner must have minimum 0.20 hectare land or registered leased land for 30 years and licence shall not be granted for more than one crop for the fruit nursery of land of 0.20 hectare:
Provided that in hilly area the nursery owner must have minimum 0.10 hectare land;
- (v) The licence shall be granted for the establishment of fruit nursery by keeping in the view the conditions for the soil, climate and fruit plant propagation;
- (vi) Propagation of fruit plants under nursery is subject to availability of mother plant and rootstocks as per standard of vegetative propagation;
- (vii) Mother plants and rootstocks must be free from disease and pest;
- (viii) Plant protection measures shall be adopted to prevent disease and pest infestation.
- (ix) Licence of nursery shall have always be in the premises of nursery and it shall be produced before the licensing authority/inspection officer as per their demand during the visit in nursery;
- (x) The licence holder shall maintain a records regarding the application of pesticides in terms of preventive and control measures to avoid the incidence of insects and diseases of mother plants and rootstocks;
- (xi) The licence holder shall propagate and sale only those plants for which the license has been issued;
- (xii) The plant propagate by the license holder for sale shall be the following specifications:

- (a) The age of a fruit plant shall not exceed three years from sowing of seeds or cutting;
- (b) The rootstock and scion should be completely joined together.
- (c) The connection of the scion and rootstock shall not be more than 30 cm from the ground level.
- (xiii) The licence holder shall maintain various records of prescribed Forms under the provision of the Act;
- (xiv) Such fruit plants which are not as per the standard shall be destroyed in the presence of the licensing authority or any officer authorized by him;
- (xv) Where more than one fruit nursery is owned by individuals/institution, whether in the same town or village or in different towns or villages, separate license shall have to be obtained in respect of each such fruit nursery;
- (xvi) The applicant must have the Udyan Card and Aadhar Card according to sub section (4) of section-4 of the Act;
- (xvii) The licence holder must have to get Accreditation Certificate from the National Horticulture Board, Government of India, after obtaining licence;
- (xviii) Every nursery owners must have to require the licence of Goods and Services Tax (GST).
- Procedure of application for Issue/renewal of Licence** 4. (1) Every application for the licence under sub section (1) of section 4 of the Act, shall be submitted in the prescribed forms no. 1 and 2 to the Licensing Authority along with prescribed fee. It shall be given in duplicate and shall be duly signed by the applicant.
- Provided that the applicant shall be bound to give such additional information as the licensing authority may require for grant of permission in accordance with the provisions of the Act and these rules;
- (2) The application form shall be submitted to the Chief/District Horticulture Officer of the concern district. Verification of the content of proposed nursery in application shall be carried out by the concerning Chief/District Horticulture Officer as per instructions given by Director, Horticulture and Food Processing, Uttarakhand and same shall be submitted to the Licensing Authority under prescribed form no.1(a) under sub section (2) of section-4 within stipulated period (one month).
- (3) For the renewal of licence, the applicant has to submit an application in form no 3 under sub section (3) of section 6 with prescribed fee through challan to the Licensing Authority. Renewal may be done by the concerning Authority after satisfying the prescribed provisions under the relevant section of the Act.
- Fee for Issuance/Renewal of Licence and Validity Period** 5. (1) A licence under sub section (1) of section 6 shall be valid for three Calendar years for first time while renewed licence shall be valid for next two Calendar year and validity of the licence shall be expired on last day (31st December) of the calendar year;

- (2) A copy of the original challan of the prescribed license fee shall be attached with the applications referred to in sub-rule (1) and (3) of rule 4 mentioned above;
- (3) Renewal of the licence may be done only after providing a certificate of 15 days training related to the nursery before the expiry of the stipulated period along with prescribed application form as well as fee (Form no.2);
- (4) Renewal shall be done only after satisfying the prescribed provisions under sub section (3) of section 6 of the Act;
- (5) Licence and renewal fee shall be subject to area of the nursery as follows:

Sl. No.	Area of nursery	Prescribed Fee		Renewal with Late Fee
		New Licence	Renewal	
(1)	Up to 0.1 to 0.2 hectare	2,000	1,000	1,500
(2)	Up to more than 0.2 hectare to 1.0 hectare	5,000	3,000	4,500
(3)	Up to more than 1.0 hectare to 2.0 hectares	10,000	5,000	7,500
(4)	More than 2 hectares	20,000	10,000	15,000

- (6) The amount of the prescribed licence fee shall be deposited by the applicant in the treasury through challan under the Budget Head "0401- Fasal Krishi Karma, 00-, 800- Anya Praptiyan, 00-, "13-Udyan Vibhag ki anya praptiyan";
- (7) An application for renewal of a license shall be submitted to the licensing authority by 31st October of the previous year for which the license is required to be renewed, unless the date is extended by the Authority;
- (8) The original copy of the issued license under section 4 shall also be required to be attached with the application for renewal;
- (9) If any licensee of nurseries produces his application before the Licensing Authority for the renewal after stipulated date and up to December 31 mentioned in sub-rule (7). In this case the licensee has to pay One and Half times of prescribed fee for renewal described in sub rules (5).

Proceedings of 6. Suspension/Cancellation of Licence, hearing, issuance of orders and appeal

- (1) As a result of the confirmation of the factors described under sub-section (1) of section 7 of the Act, the license may be suspended/cancelled by the Licensing Authority;
- (2) As office order issued for suspension/cancellation of the licence, the licence holder shall have to deposit the original copy of licence in the office of the Licensing Authority;
- (3) Where any licence is suspended or cancelled, the licence holder shall not be entitled to neither any compensation nor any refund of fee paid by him for the licence;
- (4) Every order for refusal of licence under sub section (3) of section 4 of the Act or to refuse renewal under sub section (3) of section 6, or suspension/cancellation of a licence under sub section (1) of section 7 shall be made available in written to the relative licence;

- (5) Mentioning the sufficient reasons shall be required in the support of proceeding of suspension of licence;
- (6) Before issuing every such order mentioned above in sub rule (4), the Licensing Authority shall give an opportunity of being heard to the applicant or licence holder as the case may be, within 30 working days;
- (7) Any applicant/licence holder aggrieved by order of the Licensing Authority for refusal of licence under mentioned in sub-rule (4) may appeal within 30 days from the date of communication of such order before Appellate Authority:

Provided that the Appellate Authority, if satisfied that the appellant could not file the appeal in specified period due to some reasonable cause, may accept the appeal even after the expiry of period specified in the subsection;

**To Maintain Account
Books, Registers and
Patent of New
discoveries**

7. (1) Every nursery owner shall maintain related account books, registers and records of other related activities in such forms and in such a manner as may be prescribed under section 14 of the Act and following registers shall have to be maintained:
 - (a) Mother plant register (Form-6)
 - (b) Source of rootstock and scion (Form-7)
 - (c) Sales register (Form-8)
 - (d) Inspection register (Form-9)
 - (e) Plant protection register (Form-10)
 - (f) Information regarding total number of plants propagated, crop and variety wise details of sale should be mentioned for the period 01 April to 31 March every year. A copy of such information shall be submitted to the Licensing Authority at the end of April of every year (Form-11);
- (2) Above all information/registers shall have preserved for a period of 10 years by the nursery owner;
- (3) If Development of new varieties of any crop or intervention of new technologies is conducted by the nursery owner, so necessary procedure shall be followed by the nursery owner for the provision of its patent as per section 13 of the Act and such information shall be circulated to Licensing Authority for his notice;

**Inspection and
Checking of Nursery**

8. (1) According to sub section (4) of section 15 of the Act, the inspection officer may inspect the nursery to ensure healthy and high quality plant production and may issue a written recommendations/directions in this regards.
- (2) Inspection of the nursery shall be done by the Senior Horticulture Inspector/District/Chief Horticulture Officer and other departmental officers of the concerned district;
- (3) The inspection officer may during inspection of nursery may issue directions to destroy the infected plants and trees by observing the situation of insect and pests within a prescribed time limit.

- (4) If the procedure is not followed by the nursery owner in stipulated period prescribed by the Inspecting Officer, so Department of Horticulture may itself take action as per sub section (3) of section 15 to destroy such saplings and trees. All expenses incurred so shall be borne by the concerning nursery owner which may be recovered as recovery of the arrear of land revenue through the Revenue Department.
- (5) Any kind of inspection shall be done by officer not below the rank of category 2 authorised by Competent Authority.
- (6) A declaration shall be done regarding useful/useless mother plants available in the nursery by the officer authorized by Competent Authority during his inspection. If he/she is satisfied that particular mother plants/materials are being used for propagation shall not be suitable for fruit industry. For which the following reasons may exist:
 - (a) Poor quality of fruit production;
 - (b) Decrease in fruiting capacity;
 - (c) Suffering from such insects, diseases, which cannot be controlled;
 - (d) Any other reason, to which the Competent Authority shall have deemed suitable for the fruit industry.
- (7) No above plant shall be used in plant propagation by nursery owner, resulting to check the spreading incidence/infection of insect and diseases in mother plants, newly propagated plants. The order for felling of such useless/infected trees shall be issued by the Competent Authority, whose compliance shall be ensured by the nursery owner.
- (8) The nursery owner, during the inspection by inspecting officer, shall also send the compliance report of the instructions mentioned in the inspection register regarding the nursery to the licensing officer through the inspector in a stipulated period, while recording it in the inspection register.

Information regarding 9. (1) Licence holder/nursery owner shall inform about the availability of salable rainy season planting material by the month of May and the availability of winter planting material by the month of October in writing to the Director, Department of Horticulture and Food Processing through concerned District / Chief Horticulture Officer.

- (2) Information provided by the license holder/nursery owner of the plants of salable fruit such as- age of the plants, varieties, the number of mother plants implied in the accreditation certificate, the number of plants ready for sale as per the standard, the validity of the accreditation/licensing certificate, physical verification of the rootstock and scion obtained from various institutions/nurseries under the genetic description etc. shall be done by the constituted departmental committee at the address/place mentioned in the license letter of the fruit nursery. The report of which shall be made available to the Director of the Horticulture.

Issue of duplicate copy of License

- (3) Only after the verification of the committee, the process of excavation of fruit plants from the fruit nurseries shall be allowed. Otherwise, allotment of saplings of such plant shall not be considered.

- (1) If any license has been lost or destroyed, torn, mutilated or otherwise becomes unreadable, then submission of only Rs. 500.00 as a fee in the treasury by challan under the head specified in sub rule (2) of rule 6 of this rules, a duplicate copy of the license may be issued.

- (2) The application for issuance of duplicate of the license shall be given in form no.-4 and along with this it shall be necessary to attach the original challan for depositing the fee specified in sub-rule (1) above.

- (3) If a duplicate license is required to replace any license which is due to the loss or destruction of the license, the applicant form no.-5 shall performed the indemnity bond.

- (4) The applicant shall submit the license which is torn, mutilated or otherwise rendered unreadable, along with the application for the issue of duplicate copy of the license, to the licensing authority.

- (5) When a license is lost or destroyed, the permit holder/license holder shall mention this fact in the local important newspapers or if there is no local newspaper, then license holder shall immediately notify it in important newspapers within the state and clippings of those newspapers in which this fact is notified shall be attached to the application for grant of duplicate of the license.

Sale of Plants, Packing and Label of QR Tagging Code

- (1) Every plant of fruit intended for sale under sub section (1) of section 16 shall be properly labelled with QR tagging code containing all the information related to the plant such as name of fruit nursery, license number, number of fruit plants, types of fruit plants, rootstock used in plants, species of plants and age of plants etc. have been mentioned so that any farmer may get all the information related to plants through this immediately.

- (2) The QR tagging code label shall be properly tied to the plants.

- (3) Proper QR tagging code shall be put on the mother plants in the mother plant block of the nursery.

- (4) Planting/propagation of same type and species shall be done in one bed of nursery. Along with this, a board with the name of the species shall also be put in that bed.

- (5) The license holder shall keep a map of the nursery in the nursery, indicating the location, types and varieties of mother plants.

- (6) In relation to the plant material, it is necessary for all the government and non-government nurseries established in the state that the means by which they buy the plant material should be beneficial, if they are not found beneficial, then for them also under section 18 of the Act necessary action shall be taken.

(7) The nursery owner shall do the packing of the allotted plants only in front of the representative of the concerned Chief and District Horticulture Officer.

(8) As per sub section (5) of section 16 of the Act, if the nursery owner receives fruits from any fruit nursery other than his own fruit nursery for the purpose of sale of fruit saplings, then it shall be necessary to get the self-declaration of the genetic characteristics of the fruit plants and the techniques adopted, being pest-disease free etc, on the stamp paper of Rs. 100.00 (Rupees hundred only), which shall be presented to the verification committee during nursery verification.

Duties of the License Holder 12.

(1) Propagate for production and sale only the plants of fruit of the varieties mentioned in the license relating to the scion or rootstock as the licensing authority may direct.

(2) Shall maintain complete records of the original source of each rootstock and scion, including the botanical name and local name, if any, of the rootstock.

(3) The mother plant block of fruit plants and other plants which are to be vegetatively propagated, shall be kept in mother plant block under which similar species wise plants shall be maintained in high management. Propagation of plants should be done only on those crops and species for which they have got licence.

(4) Shall propagate vegetatively only those plants and species, for which he/she owns a mother plant and the maximum number of plants propagated in the nursery shall depend on the standard number of such species/plants in the mother plant block.

(5) Shall use the latest approved techniques for fruit plant propagation and follow the guidelines issued by the Competent Authority for this purpose;

(6) Shall not mix other species/plants in the propagated fruit plants. Hence the techniques have to be followed carefully at the time of propagation.

(7) The nursery site and mother plant used for the production of fruit plants shall be kept free from pests and diseases;

(8) Sell or distribute only such fruit plants, which are free from any kind of pests and diseases;

(9) Sell the planting material to the farmers, Horticulture Department and other departments only under the terms and conditions mentioned in the provisions of the Act or self-declaration;

(10) The Chief/District Horticulture Officer and Nursery Development Officer of the concerned district shall send their recommendation to the licensing authority for the promotion of only such types of fruit plants according to the demand of their district.

Powers of Licensing Authority 13.

(1) Subject to section 20 of the Act, expect from any licensed nursery owner to furnish such information in respect of fruit nurseries owned or operated by him, as he may specify.

- (2) To satisfy that the expectations of this Act and the rules made thereunder are being complied with, may enter any fruit nursery and inspect the same and the plants situated therein and the books of account and records relating thereto.
- (3) May take a sample of fruit plants and analyse, test or test the same in any laboratory earmarked for this use.
- Protection of action taken in Good Faith** 14. (1) No suit, prosecution or other legal proceeding shall be instituted against any person for anything which is in good faith done or intended to be done under this Act or the rules made thereunder.
- (2) No suit or legal proceeding shall lie against the State Government for damage caused or likely to be caused by any act which is in good faith done or intended to be done.
- Training of Farmers** 15. (1) Subject to section 22 of the Act, to make the farmers of the state aware of the advanced techniques, nuances and specifications to be adopted while preparing garden activities, especially fruit plants, according to the adaptability of the climate of the region, the surrounding educational tour and training shall be conducted in the state fruit nurseries so that if the farmer himself wants to buy fruit saplings from any fruit nursery, he shall be able to buy special and quality planting material along with the bill.

Appendix-1

Self Declaration by Nursery owner

I, Mr./Ms./Mrs.....Son/daughter/wife.....

resident.....declare that I shall propagate and sell fruit plants produced in my fruit nursery subject to the following declarations:-

1. I shall use the rootstock and scion of fruit plants of the same species for plant propagation and sale, for which fruit nursery license has been issued and shall be done as per the instructions issued by the licensing authority.
2. All records shall be maintained in the format provided by the licensing authority.
3. I shall prepare the layout of the rootstock and mother plant to be grown in the fruit nursery.
4. Mother plant used by me for plant propagation along with fruit nursery farm shall be kept free from pests and diseases.
5. In the packing done by me at the time of sale, the species packed shall be tagged, in which the rootstock and the scion used in the propagation of this species shall be clearly mentioned.
6. I also declare that the plants which shall be sold or distributed by me shall be of the same species as recommended by me and they shall be completely free from pests and diseases, otherwise all compensation of the farmer shall be bear me. The compensation shall be determined by the licensing authority or a committee constituted under the chairmanship of the Chief/District Horticulture Officer nominated by licensing authority.
7. A register shall be maintained by me in the fruit nursery, in which the name of the rootstock and scion used for the propagation of fruit plants sold/distributed to any person or organization shall be mentioned as well as the name and address of that person or organization shall be recorded, to which the fruit plant has been sold. These registers shall be maintained by me for at least 10 years.
8. After the inspection of the fruit nursery, the instructions given by the licensing authority or their representative regarding the production and specifications of healthy and disease-free plants of fruit plants shall be followed.
9. I shall follow the conditions laid down by the Uttarakhand government in relation to the recommendation for quality plant propagation and their selling rate.
10. There shall be no objection by me if I am inspected in relation to the work being done in the fruit nursery, such as mother plant, rootstock, pests and diseases, plant growth and development, quality of plants and genetic characteristics of plants, used in the propagation of plants. Also, if suggestions are given to remove or destroy the plants affected by insect-diseases during the inspection, then I shall be ready to destroy such plants, for which no compensation shall be demanded by me.
11. No other crop shall be produced by me other than the crops included in the registration of the fruit nursery.
12. If there is any violation of the provisions mentioned in the Uttarakhand Fruit Nurseries (Regulation) Act, 2019 by me, then I shall bear the punishment mentioned in the Act.

Signature of the nursery owner.....

Name of the nursery owner.....

Name of father/husband of nursery owner.....

Name and address of the fruit nursery.....

Date.....

Form No. -1
(See rule 4 (a))

Application Form for License under the Uttarakhand Fruit Nurseries (Regulation) Act, 2019:-

1- Name of the application/applicants:-

Father's / Husband's name-

Address-

2- (a) Name and address of the fruit nursery (including post office, police station, railway station):-

(b) Distance (in meter) of fruit nursery from the motorway-

3- Area of the fruit nursery(ha), Khasra number and owner of the land (attach revenue copy) and mention the extent of the fruit nursery (map attached)

4- Age and number of mother plants including varieties available

Sl. No.	Types of fruits	Species	Age	Total number of mother plants	Condition of mother plants and plants	Source and knowledge of plant procurement	Remark
1	2	3	4	5	6	7	8

5- The type and variety of fruit plants intended for production.

Sl. No.	Types of fruits	Species
1	2	3

6- Source of irrigation:-

7- The type of soil and climate of the land in which the fruit nursery is located.

8- Name of the treasury and the number, date and amount of the treasury challan (enclosed) duly authenticated.

9- Period for which licence is required.

10- I/We declare that the particulars of the information furnished herein are true to the best of my/our knowledge and belief.

11- If I/we need the rootstock or scion, then I/we shall buy it from the official authority.

12- I /We have studied the Uttarakhand Fruit Nurseries (Regulation) Act, 2019 and the Rules thoroughly. I/We undertake to abide by the provisions contained herein.

Signature of Applicant

Date-

Prerequisite - This application form shall be signed by:-

- (1) Where the fruit nursery is run by a private person/persons, by any one of its owner/owners or other competent officer/In-charge.
- (2) Where the fruit nursery is run by a corporation/public undertaking, by its general manager/manager or other competent officer/In-charge.
- (3) Where the fruit nursery is run by a cooperative society, by its secretary.

Form No. -1(a)

(See rule 4 (b))

Format for Verification Officer

It is certified that Ihave inspected the nursery on the date of This nursery is/shall be operated by Mr./Mrs..... son/daughter/wife

Following are the reports related to the nursery-

1. The applicant hasha area under nursery.
2. The position of mother plants at the time of verification is as follows-

Sl. No.	Types of mother fruit plants	Species	Production and quality	Number of plants	Age	Condition of mother plants and plants	Remark
1	2	3	4	5	6	7	8

3. Map of the nursery and mother plant which have been kept safe by the nursery owner.
4. The nursery has been kept/has not been kept free from pests/diseases.
5. The condition of mother plants are maintained/not maintained well.
6. Soil is suitable/unsuitable for nursery production.
7. Licence to be given for establishment /operation of nursery is reasonable/is not , the reasons are as follows.
8. The information provided by the applicant are/are not correct.
9. Means of irrigation and other information, if any,
10. On the basis of verification, I am recommended/not recommended to issue licence certificate for nursery.

Date.....

Signature of Verification Officer
Designation
Office seal

Form No.-2
(See rule-4(a))

Terms and Conditions Prescribed under the Uttarakhand Fruit Nurseries (Regulation) Act, 2019

Licence No.:-

1- Name and address of the licence holder-

2- Status of the fruit nursery-

3- The type and variety of fruit plants to be produced under this licence is given under the provisions of the Uttarakhand Fruit Nurseries (Regulation) Act, 2019 and subject to the terms and conditions specified in the rules made under the Act is subordinated.

Place:-

Date:-

Validity period	Licence fees (Rs.)	Renewal fees (Rs.)	Area of nursery	Signature of licencing Authority Officer
1	2	3	4	5

Terms and Conditions

- 1- The license shall be done keeping in mind the soil, climate and conditions prescribed for fruit plant propagation.
- 2- The fruit nurseries have mother plants and rootstocks for vegetative production of fruit plants.
- 3- The mother plant and rootstocks are free from diseases and pests.
- 4- Plant protection process shall be adopted to prevent disease and pest infestation.
- 5- Licence shall always be kept in the premises of the fruit nursery. The license shall be produced for inspection and scrutiny on demand by the authority.
- 6- The license holder shall inform the licensing authority of the spread of any disease or pest in the fruit plants, mother plants and rootstocks of the fruit nursery and the action taken to control that disease and pest.
- 7- The license holder shall produce and sell only those plants for which the license has been granted.
- 8- The grafts prepared by the license holder and offered for sale shall be of the following specifications:-
 - (a) The age of a fruit plant shall not exceed three years from the time of grafting or sowing of the seed of the fruit plant, as the case may be;
 - (b) The rootstock and the scion are completely joined;
 - (c) The connection of the scion with the rootstock shall not exceed 30 cm from the ground level.
- 9- The license holder shall maintain various records in the forms prescribed in the Uttarakhand Fruit Nurseries (Regulation) Act, 2019.
- 10- The holder of the licence shall comply with the various provisions of the Uttarakhand Fruit Nurseries (Regulation) Act, 2019 and the Rules made thereunder and in case of default or contravention, he shall be liable to be paid under sub section (1) of section 18 of the Act. On first conviction, as the case may be a fine up to Rs. 50000.00 or imprisonment for 06 months and in the case of second conviction with 6 months of imprisonment and a fine of Rs. 50000.00. In addition, he shall also be responsible for Para-6 of Appendix-1.
- 11- Fruit plants which are not as per the standard shall be destroyed in the presence of the Licensing Authority or any officer authorized by him.

Form No.-3
(See rule-4(c))

Application for Renewal of License under section 5 of the Uttarakhand Fruit Nurseries (Regulation) Act, 2019:

- 1- (1) Name of the applicant, father/husband's name and address:-
(2) Name of the fruit nursery owner/owners, father's name and address:-
- 2- Name and location and postal address of the fruit nursery:-
- 3- (1) Number and date of the licence for which renewal is desired:-
(2) Date of expiry of the present licence:-
- 4- Details of any change in the type and variety of fruit plants which are being produced after the issue of existing licence or renewal.
- 5- Amount of fee deposited, name of treasury (duly receiving attached) number and date of treasury challan:-
- 6- Period for which renewal of licence is required.
- 7- Any other information to whom/who wish to apply.
- 8- I/we declare that the information/details given herein are true to the best of my/our knowledge and belief.
- 9- I/we undertake to abide by the provisions of the Uttarakhand Fruit Nurseries (Regulation) Act, 2019 and the Rules made thereunder and such directions as the Licensing Authority may give from time to time under the said Act and rules.

Date -

Signature of the Applicant/Applicants

Prerequisite:- This application form shall be signed by:-

- (1) Where a fruit nursery is run by private person/persons, by one of the owner of the fruit nursery owner/owners,
- Or**
- (2) Where the fruit nursery is run by a corporation/public undertaking, there by the general manager or manager,
- Or**
- (3) Where the fruit nursery is being run by a co-operative/society, there by the secretary.

Form No.-4

(See rule 10)

Application for Issue of Duplicate of Licence under section 5 of the Uttarakhand Fruit Nurseries (Regulation) Act, 2019:

To,

Licensing Authority

Sir,

I/we.....son/daughter (daughters) of Mr.resident.....post officePolice stationdistrict..... I/we declare that my/our licence No.given under section for the period ending on..... in the following circumstances. (Where mention the circumstances in which the licence was lost/destroyed/damaged/defaced/unreadable).

2- I/we, therefore, request you to issue a duplicate of the licence to me/us on the same terms and conditions on which the original licence was granted.

3- I/we hereby do/we do attach treasury challan in proof of paying the prescribed fee of rupees (..... rupees).

4- I/we hereby solemnly declare that the particulars or information given herein is true to the best of my/our knowledge/belief.

5- I/we hereby surrender the photo copy of original license (when the licence is lost or destroyed).

Witness (1)

Witness (2)

(Here should be the name and address of the two witnesses and their full signature)

Sincerely

Signature of the Applicant/Applicants

Date:-

Appropriate clause to be mentioned and underlined.

Prerequisite:-The words which are not necessary in the application form should be struck off.**This application form shall be signed by-**

(1)- Where a fruit nursery is run by a private person (persons), by one of the owner of the fruit nursery owner/owners,

Or

(2) Where the fruit nursery is run by a corporation/public undertaking, there by the general manager or manager,

Or

(3) Where the fruit nursery is being run by a co-operative society, there by the secretary.

Form No.-5

(See rule 10)

Affidavit

To,

.....
.....
.....

Licence number..... dated..... given to me/us under the Uttarakhand Fruit Nurseries (Regulation) Act, 2019. Which I/we have lost, that in consideration of the duplicate being given by the Licensing Officer on the date of and the administrator agrees to indemnify the Government of Uttarakhand for any loss or damage that may be caused to any person using the original license and I/we shall send the original license to the licensing authority whenever he/we shall get it/we also promise to return,

And I/we hereby further agree that the State Government shall be entitled to recover from me/us all loss or damage as arrears of land revenue as aforesaid.

Date 20 was signed in
(Executive) signed by.

In the presence of the following:-

1-

2-

Address.....

Note:- This indemnity contract shall be executed at the highest stamp paper value of fair value.

Form No. -6
Register of Mother Plants
 (See rule-7(a))

Name of the nurseryLicence letter no.....

Types and variety of mother plant	Number of mother plants	Source of procurement	Procurement year	Capacity of fruit production	Quality of fruit	Remarks of Inspecting Officers
1	2	3	4	5	6	7

Form No. -7
Rootstock and Scion Source Register
 (See rule-7(b))

Name of the nurseryLicence letter no.....

Date	Source of rootstock procurement	Source of scion procurement	Number of plants prepared	Remarks of Inspecting Officers
1	2	3	4	5

Form No. -8
(See rule-7(c))
Sale/Cash Receipt

Name of the nurseryLicence letter no.....

Sl. No.	Seller's name and address	Types and species of plants sold	Rootstock used	Number of plants sold	Rate of plants	Receipt no. and date	Remark
1	2	3	4	5	6	7	8

Form No.-9
(See rule-7(d))
Inspection Register

Name of the nurseryLicence letter no.....

Sl. No.	Date of Inspection	Name and designation of Inspecting Officer	Instruction of Inspecting Officer	Compliance by Nursery owner
1	2	3	4	5

Form No. -10
(See rule-7(f))
Plant Protection Register

Name of the nurseryLicence letter no.....

Sl. No.	Date	Names of Insecticides/Diseases	Control (name and quantity of chemical pesticides)	Remark
1	2	3	4	5

Form No. -11
(See rule-7(c))
Annual Statement of Production and Sales

Name of the nurseryLicence letter no.....
Date.....from.....till.....

Sl. No.	Type and species of fruit plant	Number of seedlings produced			Relics of base adding years	Total no. of plants sold	Remaining plants as on 31st March
		Salable	Non-salable	Total			
1	2	3	4	5	6	7	8

By Order,

R. MEENAKSHI SUNDARAM,
Secretary.



सरकारी गजट, उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड सरकार द्वारा प्रकाशित

रुड़की, शनिवार, दिनांक 19 फरवरी, 2022 ई0 (माघ 30, 1943 शक सम्वत्)

भाग 1—क

नियम, कार्य—विधियां, आज़ाएं, विज्ञप्तियां इत्यादि जिनको उत्तराखण्ड के राज्यपाल महोदय, विभिन्न विभागों के अध्यक्ष तथा राजस्व परिषद् ने जारी किया

HIGH COURT OF UTTARAKHAND, NAINITAL

NOTIFICATION

7th January, 2022

No. 01/UHC/Admin.B/2022-- Having considered the imminent danger to human life by spread of COVID-19 virus and alarming rise in number of persons affected thereby, in view of the health guidelines issued by the Government of India and the State Government, for safety of the litigants, advocates, officers and staff of the Hon'ble Court, Hon'ble the Acting Chief Justice is pleased to issue following directions for transaction of business in the Hon'ble High Court w.e.f. 10.01.2022 (Monday).

1. Till further orders, only following types of cases will be taken up by the Hon'ble Court-
 - (A) All fresh matters.
 - (B) Pending matters of following category-
 - (a) Bail Applications.
 - (b) Writ Petitions Criminal (WPCRL).
 - (c) Criminal Miscellaneous Application u/S 482 CrPC.

- (d) Writ Petitions (Habeas Corpus).
 - (e) Writ Petitions seeking relief against eviction, ejectment, dispossessions from property, or its demolition.
 - (f) Writ Petitions seeking relief against attachment, auction or any similar legal recourse affecting the property.
 - (g) Special Appeals, where applicable, against the orders passed in aforesaid matters.
 - (h) Urgency applications.
 - (i) Any other matter, as per directions, on being mentioned before the respective bench.
2. All the matters shall be taken up exclusively through video conferencing.
 3. Where print out of a judgment/order, uploaded in CIS/NJDG is present before any Court/Tribunal subordinate to the High Court, or before any Authority or Person, the authenticity of such judgment/order shall be ascertained by such Court/Tribunal/Authority/Person by comparing the same with the judgment/order uploaded in the CIS/NJDG, and where the authenticity has been so ascertained, the said Court/Tribunal/Authority/Person shall not press for the certified copy, and shall act, as if the print out, so presented, is the certified copy.
 4. All pending matters will stand adjourned, notwithstanding they are dates fixed.

By Orders of the Acting Chief Justice,

Sd/-

Registrar General.

HIGH COURT OF UTTARAKHAND, AT NAINITAL

NOTIFICATION

7th January, 2022

No. 02/UHC/Admin.B/2022--Having assessed the COVID affected cases in all the districts of the State and issues related thereto, in view of the health guidelines issued by the Government of India and the State Government and keeping in view the safety of litigants, advocates, officers and staff of the Subordinate Courts, Hon'ble Court, is pleased to issue following directions for conduct of work in the Subordinate Courts w.e.f. 10.01.2022 (Monday).

1. Till further orders, Subordinate Courts of Dehradun (except Chakrata outlying court), Haridwar and Udham Singh Nagar along with outlying Courts at Haldwani, Ramnagar, Kotdwar and Tanakpur will take up following matters only—
 - (a) Remand, and all bail applications (fresh or pending)
 - (b) Applications for release of property
 - (c) Applications under Section 156 (3) of the Code of Criminal Procedure, 1973
 - (d) Applications for temporary injunctions/stay
 - (e) Applications for interim maintenance
 - (f) Applications for issue of succession certificates
 - (g) Matters under section 13B of the Hindu Marriage Act, 1955
 - (h) Applications for settlement of dispute by compromise
 - (i) Matters relating to investigation by the Police
 - (j) Final arguments, where both the parties are ready
 - (k) Any extreme urgent matter arising from extraordinary circumstances. For hearing in such matter, request along with the facts that matter cannot wait till this Notification is in force, shall be e-mailed and the Jurisdiction Court by passing a speaking order, deems it fit and appropriate to take up the matter.
2. The remaining subordinate Courts will take all the routine matters.
3. All matters, mentioned above, shall be taken up exclusively through video conferencing.
4. For convenient enforcement of this Notification, District Judges may give such directions, which they may deem fit and appropriate and are not inconsistent with the Notification for their respective Judgeships.
5. In these orders, in relation to the Family Courts, the word 'District Judge' shall be read as 'Principal Judge/Judge, in-charge', Family Courts.

By Orders of Hon'ble Court,

Sd/-

(Registrar General).

उत्तराखण्ड विद्युत नियामक आयोग

अधिसूचना

04 जनवरी, 2022

संख्या 01/प्रशा0/6(4)/उविनिआ/2021-22-आयोग कार्यालय की अधिसूचना संख्या 01/प्रशा0/6(4)/उविनिआ/2021-22/886 दिनांक 03.12.2021 के क्रम में तथा विद्युत अधिनियम 2003 की धारा 87 के अन्तर्गत गठित विद्युत सलाहकार समिति में नामित सदस्य अरिसटेन्ट प्रोफेसर, डिपार्टमेन्ट ऑफ इकोनोमिक, दून विश्वविद्यालय, देहरादून के स्थान पर प्रोफेसर एवं हेण्ड, डिपार्टमेन्ट ऑफ इकोनोमिक, दून विश्वविद्यालय, देहरादून को नामित किया जाता है।

उक्त आदेश इस सीमा तक संशोधित समझा जायेगा।

आयोग की आज्ञा से,

नीरज सती,

सचिव।

कार्यालय सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी,

टनकपुर (चम्पावत)

आदेश

29 दिसम्बर, 2021 ई0

पत्रांक:-1401/पंजीयन निरस्त/2021-22-वाहन संख्या HR38M9634 (HGV) मॉडल 2005 चैचिस 373344GUZ731581 इंजन न0 697TC55FUZ119273 इस कार्यालय अभिलेखानुसार वाहन श्री मोहन चन्द्र भट्ट पुत्र श्री भोला दत्त भट्ट निवासी-मनिहार गोठ टनकपुर चम्पावत के नाम पंजीकृत है। दिनांक 21/12/2021 को वाहन स्वामी द्वारा वाहन के पंजीयन निरस्त हेतु (क्योंकि वाहन चलने योग्य नहीं है) आवेदन किया गया है,। वाहन फाइनेन्स से मुक्त है। प्रवर्तन अनुभाग की आख्या के अनुसार वाहन पर कोई चैक चालान लम्बित नहीं है। सीनियर फोरमैन (उत्तराखण्ड परिवहन निगम टनकपुर) की आख्यानुसार वाहन का मूल चैचिस प्लेट नष्ट कर जमा कर लिया गया है। उक्त तथ्यों के आधार पर वाहन के पंजीयन/चिन्ह के बने रहने का कोई औचित्य नहीं रहता है।

अतः मैं रश्मि भट्ट सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी टनकपुर (चम्पावत) केन्द्रीय मोटरयान अधिनियम 1988 की धारा 55 के अन्तर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुये दिनांक 29.12.2021 को वाहन संख्या HR38M9634 (HGV) मॉडल 2005 चैचिस 373344GUZ731581 इंजन न0 697TC55FUZ119273 को तत्काल प्रभाव से निरस्त करती हूँ।

आदेश

29 दिसम्बर, 2021 ई०

पत्रांक:-1404/पंजीयन निरस्त/2021-22-वाहन संख्या UK07PA-1413 (BUS) मॉडल 2012 चैचिस MAT412049C0B03551 इंजन न० 21B84042546 इस कार्यालय अभिलेखानुसार उत्तराखण्ड परिवहन निगम टनकपुर, चम्पावत के नाम पंजीकृत है। दिनांक 21/12/2021 को वाहन के पंजीयन निरस्त हेतु (क्योंकि वाहन चलने योग्य नहीं है) आवेदन किया गया है,। वाहन फाइनेन्स से मुक्त है। प्रवर्तन अनुभाग की आख्या के अनुसार वाहन पर कोई चैक चालान लम्बित नहीं है। सीनियर फोरमैन (उत्तराखण्ड परिवहन निगम टनकपुर) की आख्यानुसार वाहन का मूल चैचिस प्लेट नष्ट कर जमा कर लिया गया है। उक्त तथ्यों के आधार पर वाहन के पंजीयन/चिन्ह के बने रहने का कोई औचित्य नहीं रहता है।

अतः मैं रश्मि भट्ट सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी टनकपुर (चम्पावत) केन्द्रीय मोटरयान अधिनियम 1988 की धारा 55 के अन्तर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुये दिनांक 29.12.2021 को वाहन संख्या UK07PA-1413 (BUS) मॉडल 2012 चैचिस MAT412049C0B03551 इंजन न० 21B84042546 को तत्काल प्रभाव से निरस्त करती हूँ।

आदेश

29 दिसम्बर, 2021 ई०

पत्रांक:-1407/पंजीयन निरस्त/2021-22-वाहन संख्या UK07PA-1243 (BUS) मॉडल 2011 चैचिस MAT412049B0F11231 इंजन न० 11F63144004 इस कार्यालय अभिलेखानुसार उत्तराखण्ड परिवहन निगम टनकपुर, चम्पावत के नाम पंजीकृत है। दिनांक 21/12/2021 को वाहन के पंजीयन निरस्त हेतु (क्योंकि वाहन चलने योग्य नहीं है) आवेदन किया गया है,। वाहन फाइनेन्स से मुक्त है। प्रवर्तन अनुभाग की आख्या के अनुसार वाहन पर कोई चैक चालान लम्बित नहीं है। सीनियर फोरमैन (उत्तराखण्ड परिवहन निगम टनकपुर) की आख्यानुसार वाहन का मूल चैचिस प्लेट नष्ट कर जमा कर लिया गया है। उक्त तथ्यों के आधार पर वाहन के पंजीयन/चिन्ह के बने रहने का कोई औचित्य नहीं रहता है।

अतः मैं रश्मि भट्ट सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी टनकपुर (चम्पावत) केन्द्रीय मोटरयान अधिनियम 1988 की धारा 55 के अन्तर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुये दिनांक 29.12.2021 को वाहन संख्या UK07PA-1243 (BUS) मॉडल 2011 चैचिस MAT412049B0F11231 इंजन न० 11F63144004 को तत्काल प्रभाव से निरस्त करती हूँ।

आदेश

29 दिसम्बर, 2021 ई०

पत्रांक:-1410/पंजीयन निरस्त/2021-22-वाहन संख्या UK03B-8179 MOTOR CAR मॉडल 2019 चैचिस MAJGXXMTKGKJ40735 इंजन न० KJ40735 इस कार्यालय अभिलेखानुसार वाहन श्री लालमन पुत्र श्री गोविन्द लाल निवासी-मोहनपुर, आमबाग पोस्ट एण्ड तहसील टनकपुर जिला चम्पावत के नाम पंजीकृत है। दिनांक 09/12/2021 को वाहन स्वामी द्वारा वाहन के पंजीयन निरस्त हेतु (क्योंकि वाहन चलने योग्य नहीं है) आवेदन किया गया है,। वाहन फाइनेन्स से मुक्त है। प्रवर्तन अनुभाग की आख्या के अनुसार वाहन पर कोई चैक चालान लम्बित नहीं है। सीनियर फोरमैन (उत्तराखण्ड परिवहन निगम टनकपुर) की आख्यानुसार वाहन का मूल चैचिस प्लेट नष्ट कर जमा कर लिया गया है। उक्त तथ्यों के आधार पर वाहन के पंजीयन/चिन्ह के बने रहने का कोई औचित्य नहीं रहता है।

अतः मैं रश्मि भट्ट सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी टनकपुर (चम्पावत) केन्द्रीय मोटरयान अधिनियम 1988 की धारा 55 के अन्तर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुये दिनांक 29.12.2021 को वाहन संख्या UK03B-8179 MOTOR CAR मॉडल 2019 चैचिस MAJGXXMTKGKJ40735 इंजन न० KJ40735 को तत्काल प्रभाव से निरस्त करती हूँ।

आदेश

29 दिसम्बर, 2021 ई०

पत्रांक:-1411/पंजीयन निरस्त/2021-22-वाहन संख्या URN-1283 (LGV) मॉडल 2005 चैचिस 72VFJ0522 इंजन न० A02823SVF इस कार्यालय अभिलेखानुसार वाहन श्री भूवन सिंह मेहरा पुत्र श्री आलम सिंह मेहरा निवासी-मकान संख्या 213 ख आमबाग टनकपुर चम्पावत के नाम पंजीकृत है। दिनांक 21/12/2021 को वाहन स्वामी द्वारा वाहन के पंजीयन निरस्त हेतु (क्योंकि वाहन चलने योग्य नहीं है) आवेदन किया गया है,। वाहन फाइनेन्स से मुक्त है। प्रवर्तन अनुभाग की आख्या के अनुसार वाहन पर कोई चैक चालान लम्बित नहीं है। सीनियर फोरमैन (उत्तराखण्ड परिवहन निगम टनकपुर) की आख्यानुसार वाहन का मूल चैचिस प्लेट नष्ट कर जमा कर लिया गया है। उक्त तथ्यों के आधार पर वाहन के पंजीयन/चिन्ह के बने रहने का कोई औचित्य नहीं रहता है।

अतः मैं रश्मि भट्ट सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी टनकपुर (चम्पावत) केन्द्रीय मोटरयान अधिनियम 1988 की धारा 55 के अन्तर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुये दिनांक 29.12.2021 को वाहन संख्या URN-1283 (LGV) मॉडल 2005 चैचिस 72VFJ0522 इंजन न० A02823SVF को तत्काल प्रभाव से निरस्त करती हूँ।

आदेश

30 दिसम्बर, 2021 ई०

पत्रांक:-1412/पंजीयन निरस्त/2021-22-वाहन संख्या UA03-4564 (HGV) मॉडल 2006 चैचिस 86VFJ43112P इंजन न० ALEK53360 इस कार्यालय अभिलेखानुसार वाहन श्री दुर्गा सिंह पुत्र श्री हीरा सिंह निवासी-मकान संख्या 31 गैंडाखाली नम्बर 4 टनकपुर जिला चम्पावत के नाम पंजीकृत है। दिनांक 20/12/2021 को वाहन स्वामी द्वारा वाहन के पंजीयन निरस्त हेतु (क्योंकि वाहन चलने योग्य नहीं है) आवेदन किया गया है,। वाहन फाइनेन्स से मुक्त है। प्रवर्तन अनुभाग की आख्या के अनुसार वाहन पर कोई चैक चालान लम्बित नहीं है। सीनियर फोरमैन (उत्तराखण्ड परिवहन निगम टनकपुर) की आख्यानुसार वाहन का मूल चैचिस प्लेट नष्ट कर जमा कर लिया गया है। उक्त तथ्यों के आधार पर वाहन के पंजीयन/चिन्ह के बने रहने का कोई औचित्य नहीं रहता है।

अतः मैं रश्मि भट्ट सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी टनकपुर (चम्पावत) केन्द्रीय मोटरयान अधिनियम 1988 की धारा 55 के अन्तर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुये दिनांक 29.07.2021 को वाहन संख्या UA03-4564 (HGV) मॉडल 2006 चैचिस 86VFJ43112P इंजन न० ALEK53360 को तत्काल प्रभाव से निरस्त करती हूँ।

आदेश

29 दिसम्बर, 2021 ई०

पत्रांक:-1413/पंजीयन निरस्त/2021-22-वाहन संख्या UK07PA-1480 (BUS) मॉडल 2012 चैचिस MB1PCEYC2CAYD6648 इंजन न० CAHZ104400 इस कार्यालय अभिलेखानुसार उत्तराखण्ड परिवहन निगम टनकपुर, चम्पावत के नाम पंजीकृत है। दिनांक 21/12/2021 को वाहन के पंजीयन निरस्त हेतु (क्योंकि वाहन चलने योग्य नहीं है) आवेदन किया गया है,। वाहन फाइनेन्स से मुक्त है। प्रवर्तन अनुभाग की आख्या के अनुसार वाहन पर कोई चैक चालान लम्बित नहीं है। सीनियर फोरमैन (उत्तराखण्ड परिवहन निगम टनकपुर) की आख्यानुसार वाहन का मूल चैचिस प्लेट नष्ट कर जमा कर लिया गया है। उक्त तथ्यों के आधार पर वाहन के पंजीयन/चिन्ह के बने रहने का कोई औचित्य नहीं रहता है।

अतः मैं रश्मि भट्ट सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी टनकपुर (चम्पावत) केन्द्रीय मोटरयान अधिनियम 1988 की धारा 55 के अन्तर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुये दिनांक 29.12.2021 को वाहन संख्या UK07PA-1480 (BUS) मॉडल 2012 चैचिस MB1PCEYC2CAYD6648 इंजन न० CAHZ104400 को तत्काल प्रभाव से निरस्त करती हूँ।

आदेश

29 दिसम्बर, 2021 ई०

पत्रांक:-1414/पंजीयन निरस्त/2021-22-वाहन संख्या UK07PA-1470 (BUS) मॉडल 2012 चैचिस MB1PCEYC5CAYD6861 इंजन न० CYHZ105025 इस कार्यालय अभिलेखानुसार उत्तराखण्ड परिवहन निगम टनकपुर, चम्पावत के नाम पंजीकृत है। दिनांक 21/12/2021 को वाहन के पंजीयन निरस्त हेतु (क्योंकि वाहन चलने योग्य नहीं है) आवेदन किया गया है,। वाहन फाइनेन्स से मुक्त है। प्रवर्तन अनुभाग की आख्या के अनुसार वाहन पर कोई चैक चालान लम्बित नहीं है। सीनियर फोरमैन (उत्तराखण्ड परिवहन निगम टनकपुर) की आख्यानुसार वाहन का मूल चैचिस प्लेट नष्ट कर जमा कर लिया गया है। उक्त तथ्यों के आधार पर वाहन के पंजीयन/चिन्ह के बने रहने का कोई औचित्य नहीं रहता है।

अतः मैं रश्मि भट्ट सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी टनकपुर (चम्पावत) केन्द्रीय मोटरयान अधिनियम 1988 की धारा 55 के अन्तर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुये दिनांक 29.12.2021 को वाहन संख्या UK07PA-1470 (BUS) मॉडल 2012 चैचिस MB1PCEYC5CAYD6861 इंजन न० CYHZ105025 को तत्काल प्रभाव से निरस्त करती हूँ।

रश्मि भट्ट,

सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी,

टनकपुर (चम्पावत)।



सरकारी गजट, उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड सरकार द्वारा प्रकाशित

रुड़की, शनिवार, दिनांक 19 फरवरी, 2022 ई० (माघ 30, 1943 शक सम्वत्)

भाग 8

सूचना एवं अन्य वैयक्तिक विज्ञापन आदि

सूचना

मैं आयुष मित्तल पुत्र श्री मनीष कुमार मित्तल, निवासी जैन गली, मोहल्ला सराव, ज्ञान कस्बा मंगलौर, तहसील रुड़की, जिला हरिद्वार। मेरी एलआईसी पोसली संख्या-271289920 में त्रुटि से मेरा नाम प्रणय मित्तल दर्ज हो गया है। जबकि मेरा वास्तविक नाम आयुष मित्तल है। भविष्य में मुझे आयुष मित्तल पुत्र मनीष कुमार मित्तल के नाम से जाना पहचाना जाए।

समस्त विधिक औपचारिकताएं मेरे द्वारा पूर्ण कर ली गई हैं।

आयुष मित्तल पुत्र मनीष कुमार मित्तल
निवासी जैन गली, मोहल्ला सराव, ज्ञान कस्बा
मंगलौर, तहसील रुड़की, जिला हरिद्वार

सूचना

मेरी पुत्री हिमांशी यादव के हाईस्कूल वर्ष 2020-21 अनुक्रमांक 25118433 सीबीएसई बोर्ड में उसकी माता का नाम त्रुटिवंश गंगा दर्ज हो गया है। जबकि सही नाम गंगा देवी है।

समस्त विधिक औपचारिकताएँ मेरे द्वारा पूर्ण कर ली गई हैं।

जितेन्द्र यादव पुत्र गंगा यादव
निवासी-132 सर्वहारा नगर, ऋषिकेश

सूचना

मेरे पति कर्नल विजय कुमार राजधान (वी.के. राजधान) आर्मी नं० IC-12203W Rank - Col. के सैन्य अभिलेखों में त्रुटिवंश मेरा नाम विजया राजधान दर्ज हो गया है जबकि मेरा वास्तविक नाम सरोज राजधान है। भविष्य में मुझे सरोज राजधान पत्नी कर्नल विजय कुमार राजधान के नाम से जाना व पहचाना जाए।

समस्त विधिक औपचारिकताएँ मेरे द्वारा पूर्ण कर ली गई हैं।

श्रीमती सरोज राजधान
पत्नी कर्नल वी०के० राजधान
निवासी-7 डी मसूरी रोड, गेट
विद थी बिग पिल्लर्स, राजपुर,
देहरादून उत्तराखण्ड